

CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2026 with Solution PDF-Set 2/3/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)



निर्धारित समय: 3 Hours

अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

- (i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 12 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (ii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
- (iii) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. फूल से बोली कली क्यों व्यस्त मुरझाने में है
 फ्रायदा क्या गंध औ मकरंद बिखराने में है
 तूने अपनी उम्र क्यों वातावरण में घोल दी
 अपनी मनमोहक पँखुरियों की छटा क्यों खोल दी
 तू स्वयं को बाँटता है जिस घड़ी से तू खिला
 किन्तु इस उपकार के बदले में तुझको क्या मिला
 मुझको देखो मेरी सब खुशबू मुझ ही में बंद है
 मेरी सुंदरता है अक्षय अनछुआ मकरंद है
 मैं पली काँटों में जब थी दुनिया तब सोती रहीं
 मेरी ही क्या ये कभी किसी की भी कभी होती नहीं
 ऐसी दुनिया के लिए सौभ लुटाऊँ किसलिए
 स्वार्थी समुदाय का मेला लगाऊँ किसलिए
 फूल उस नादान की वाचालता पर चुप रहा
 फिर स्वयं को देखकर भोली कली से ये कहा
 ज़िंदगी सिद्धांत की सीमाओं में बाँटती नहीं
 ये वो पूँजी है जो व्यय से बढ़ती है घटती नहीं

[8 अंक]

1(i). फूल और कली के संवाद के माध्यम से कवि ने स्पष्ट किया है :

[1 अंक]

- (A) जीवन की सार्थकता को
- (B) जीवन की क्षणभंगुरता को
- (C) जीवन की नश्वरता को
- (D) जीवन के दृष्टिकोण को

सही उत्तर: (A) जीवन की सार्थकता को

हल:

अवधारणा:

- कविता का मूल संदेश पहचानने के लिए अंतिम पंक्तियों और फूल के व्यवहार को साथ पढ़ना चाहिए।
- फूल का स्वयं को बाँटना परोपकार का प्रतीक है; जीवन की सार्थकता दूसरों के काम आने में है।

चरण 1: कविता के संदेश को पहचानें फूल अपनी गंध, मकरंद और सुंदरता संसार को देता है। अंतिम पंक्ति में जीवन को ऐसी पूँजी कहा गया है जो खर्च करने पर बढ़ती है। यह दूसरों के लिए जीने से जीवन के मूल्यवान बनने की बात है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना करें (B) क्षणभंगुरता और (C) नश्वरता जीवन के शीघ्र समाप्त होने पर केंद्रित हैं, जबकि कविता का निष्कर्ष देने के महत्त्व पर है। (D) दृष्टिकोण एक व्यापक बात है, किंतु कविता का विशिष्ट संदेश परोपकार से जीवन को सार्थक बनाना है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने जीवन की सार्थकता को स्पष्ट किया है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: अंतिम दो पंक्तियों को आधार बनाकर वह विकल्प चुनें जो बाँटने और परोपकार के संदेश को सीधे व्यक्त करे।

1(ii). काव्यांश के अनुसार कौन-सी पूँजी बाँटने से बढ़ती है ?

[1 अंक]

- (A) ज्ञान
- (B) ज़िंदगी
- (C) संपदा
- (D) दुख

सही उत्तर: (B) ज़िंदगी

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में पूछे गए तथ्य का उत्तर उसी पंक्ति के शब्दों से तय होता है।
- यहाँ पूँजी आर्थिक धन का नहीं, दूसरों के हित में लगाए गए जीवन का रूपक है।

चरण 1: निर्णायक पंक्ति पढ़ें फूल कहता है कि ज़िंदगी ऐसी पूँजी है जो व्यय से बढ़ती है, घटती नहीं। इसलिए बाँटने से बढ़ने वाली पूँजी का संबंध सीधे ज़िंदगी से है। अपने गुण दूसरों को देने से उसका जीवन अधिक उपयोगी और सार्थक बनता है।

चरण 2: विकल्पों को परखें (A) ज्ञान बाँटने से बढ़ता है, पर इस काव्यांश में पूँजी विशेष रूप से ज़िंदगी को कहा गया है। (C) संपदा यहाँ प्रयुक्त रूपक का शाब्दिक अर्थ मात्र है। (D) दुख का उल्लेख ऐसी पूँजी के रूप में नहीं हुआ है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश के अनुसार ज़िंदगी बाँटने से बढ़ने वाली पूँजी है। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सामान्य ज्ञान से उत्तर देने के बजाय पूँजी शब्द से ठीक पहले आए ज़िंदगी शब्द को पहचानें।

1(iii). काव्यांश के संदर्भ में 'वाचालता' शब्द का अर्थ है :

[1 अंक]

- (A) चालाकी
- (B) समझदारी
- (C) बड़बोलापन
- (D) मूर्खता

सही उत्तर: (C) बड़बोलापन

हल:

अवधारणा:

- शब्द का सही अर्थ उसके प्रसंग और पात्र के व्यवहार से समझना चाहिए।
- वाचालता का अर्थ बहुत बोलने की प्रवृत्ति या बड़बोलापन है।

चरण 1: कली के व्यवहार को देखें कली फूल से लगातार प्रश्न करती है और अपनी बंद खुशबू तथा अक्षय सुंदरता की प्रशंसा करती है। फूल उसकी इस बोलने की प्रवृत्ति पर पहले मौन रहता है। इसी व्यवहार के लिए कवि ने वाचालता शब्द रखा है।

चरण 2: अन्य अर्थों को अलग करें (A) चालाकी में छल या चतुराई का भाव होता है और (B) समझदारी विवेक को व्यक्त करती है। ये बहुत बोलने का अर्थ नहीं देते। (D) मूर्खता नादानी से जुड़ सकती है, लेकिन वाचालता का विशिष्ट शब्दार्थ बड़बोलापन ही है।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रसंग में वाचालता का अर्थ बड़बोलापन है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: शब्दार्थ तय करते समय नादान और वाचालता को अलग रखें; पहला समझ की कमी, दूसरा अधिक बोलना बताता है।

1(iv). कली और फूल के व्यक्तित्व में क्या अंतर है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पात्रों के व्यक्तित्व की तुलना उनके कथन और आचरण के आधार पर करनी चाहिए।
- कली आत्मकेंद्रित संरक्षण और फूल निःस्वार्थ समर्पण की जीवन-दृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चरण 1: कली का स्वभाव समझें कली अपनी खुशबू, सुंदरता और मकरंद अपने भीतर बंद रखना चाहती है। वह संसार को स्वार्थी मानती है तथा दूसरों को कुछ देने से पहले बदले में मिलने वाले लाभ का हिसाब करती है। उसकी बातों में अपनी सुंदरता का गर्व और अधिक बोलने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। वह यह नहीं समझती कि उसके गुण दूसरों के काम आकर भी सार्थक हो सकते हैं।

चरण 2: फूल का विपरीत व्यक्तित्व समझें फूल अपनी सुगंध और मकरंद वातावरण में बिखेरता है। वह प्रत्युपकार की आशा किए बिना संसार को आनंद देता है। कली की बातों पर चुप रहकर वह धैर्य और विनम्रता दिखाता है। उसके अनुसार दूसरों के हित में लगाया गया जीवन घटता नहीं, अधिक सार्थक बनता है। इस प्रकार फूल उदार, परोपकारी और अनुभवी है, जबकि कली संकीर्ण और स्वार्थपरक सोच रखती है।

चरण 3: निष्कर्ष कली अपने सौंदर्य को अपने तक सीमित रखने वाली आत्मकेंद्रित और वाचाल है; फूल शांत, उदार और परोपकारी है तथा बाँटने में जीवन की सार्थकता मानता है।

त्वरित सुझाव: तुलना में दोनों पात्रों का एक ही आधार पर अंतर लिखें: कली अपने लिए बचाती है, फूल दूसरों के लिए बाँटता है।

1(v). कली अपना सौंदर्य और महक किसी के साथ क्यों नहीं बाँटना चाहती ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र के निर्णय का कारण उसकी कही हुई बातों से स्पष्ट करना चाहिए।
- कली के तर्क में संसार के प्रति अविश्वास और अपने सौंदर्य को सुरक्षित रखने की इच्छा साथ जुड़े हैं।

चरण 1: संसार के प्रति कली का अनुभव देखें कली कहती है कि जब वह काँटों के बीच पल रही थी, तब दुनिया सो रही थी। उसके अनुसार दुनिया ने उसकी चिंता नहीं की और वह किसी की सच्ची हितैषी नहीं होती। इस अनुभूति से कली संसार को स्वार्थी समुदाय मानने लगती है। उसे विश्वास नहीं कि उसकी सुगंध और सौंदर्य लुटाने पर संसार उसे कोई स्नेह या प्रतिफल देगा।

चरण 2: उसके निर्णय का कारण स्पष्ट करें कली को अपनी बंद खुशबू, अनछुए मकरंद और अक्षय सुंदरता पर गर्व है। वह इन्हें दूसरों को देने को व्यर्थ खर्च समझती है। फूल से भी वह पूछती है कि इस उपकार के बदले उसे क्या मिला। इस लाभ-हानि वाली सोच और दुनिया के प्रति अविश्वास के कारण वह अपने सौंदर्य तथा महक को केवल अपने भीतर सुरक्षित रखना चाहती है।

चरण 3: निष्कर्ष कली दुनिया को स्वार्थी और उपेक्षा करने वाली समझती है। इसलिए वह बिना प्रतिफल अपना सौंदर्य और महक बाँटना व्यर्थ मानती है और उन्हें अपने तक सीमित रखना चाहती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दो जुड़े कारण अवश्य दें: दुनिया की उपेक्षा से अविश्वास और बदले में लाभ न मिलने की आशंका।

1(vi). कली अथवा फूल, आप किसके विचारों से सहमत हैं ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मताधारित उत्तर में स्पष्ट सहमति और काव्यांश से समर्थित कारण देना चाहिए।

- फूल का संदेश है कि दूसरों के कल्याण में लगाए गए जीवन का मूल्य और प्रभाव बढ़ता है।

चरण 1: अपना पक्ष निर्धारित करें मैं फूल के विचारों से सहमत हूँ। वह गंध और मकरंद बाँटकर वातावरण को सुखद बनाता है तथा दूसरों से प्रतिफल की माँग नहीं करता। उसका जीवन अपने गुणों का उपयोग दूसरों के हित में करने का उदाहरण है।

चरण 2: सहमति का तर्क दें यदि हर व्यक्ति अपने गुण केवल अपने तक सीमित रखे, तो समाज को उनका लाभ नहीं मिलेगा। प्रेम, सहायता और सद्गुण बाँटने से संबंध मजबूत होते हैं तथा जीवन सार्थक बनता है। फूल की बढ़ने वाली पूँजी की बात इसी सामाजिक उपयोगिता को प्रकट करती है।

चरण 3: निष्कर्ष मैं फूल से सहमत हूँ, क्योंकि निःस्वार्थ रूप से दूसरों के काम आने में जीवन की सार्थकता है और बाँटने से उसका मूल्य बढ़ता है।

त्वरित सुझाव: अपने मत के तुरंत बाद फूल के सुगंध बाँटने का उदाहरण और उससे होने वाला सामाजिक लाभ लिखें।

2. निःशब्द धीमी चाल और सदियों का साक्षी – जब कोई प्राणी हमारी धरती पर प्रकृति का सबसे शांत लेकिन सबसे मजबूत प्रहरी बनकर खड़ा हो, तो उसका महत्त्व केवल जैव-विविधता तक सीमित नहीं रह जाता, वह हमारी संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा बन जाता है। कछुआ, जो समय की रेत पर अपने धैर्य और दीर्घायु के पदचिह्न छोड़ता आया है, आज खतरे में है। 23 मई को मनाया जाने वाला विश्व कछुआ दिवस केवल एक दिन नहीं, बल्कि पुकार है, उस मौन जीवन के लिए, जिसे हमने वर्षों तक नज़रअंदाज किया और जो आज हमसे बचाव की गुहार कर रहा है।

मान्यता है कि कछुए धरती पर करोड़ों वर्षों से अस्तित्व में हैं। उन्होंने हिम युगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेला है। उनके अस्तित्व की स्थिरता, उनकी धीमी लेकिन स्थायी जीवन-शैली का प्रमाण है। मगर दुखद है कि आज जिन संकटों का वे सामना कर रहे हैं वे किसी प्राकृतिक आपदा के नहीं, बल्कि मानवीय लालच और लापरवाही के कारण हैं। विश्व में ज्ञात 350 से अधिक कछुआ प्रजातियों में से लगभग 60 फीसदी प्रजातियाँ संकटग्रस्त या विलोप के कगार पर हैं। समुद्री कछुए-जैसे मादा ऑलिव रिडले, जो हजारों किलोमीटर तैरकर अंडे देने के लिए ओडिशा तट पर आती है, को जल और प्रकाश प्रदूषण तथा मानवीय हस्तक्षेप से भारी खतरा है। इन मूक प्राणियों के लिए संकट के प्रमुख कारणों में प्लास्टिक प्रदूषण, समुद्री तटों का अतिक्रमण, अवैध व्यापार और जलवायु परिवर्तन है।

कछुआ हमें सिखाता है कि दौड़ना ज़रूरी नहीं, टिके रहना ज़्यादा ज़रूरी है। यह भी कि मौन शक्ति की एक अलग भाषा है, जो शब्दों से नहीं, बल्कि कर्म से बोलती है। उनकी धीमी चाल में हमें भविष्य की गूँज सुनाई देती है कि यदि हम उन्हें बचा पाए तो खुद को बचा पाएँगे।

[10 अंक]

2(ii). गद्यांश के आधार पर कछुए की महत्ता का मुख्य आधार है :

[1 अंक]

- (A) निःशब्द मंद गति
- (B) उसका शांत स्वभाव
- (C) जैव-विविधता का अंग
- (D) संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा

सही उत्तर: (D) संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा

हल:

अवधारणा:

- मुख्य आधार पहचानते समय आरंभ में दिए गए गुणों और लेखक के व्यापक निष्कर्ष में अंतर करना चाहिए।
- लेखक कछुए का महत्त्व जैव-विविधता से आगे संस्कृति, चेतना और पर्यावरण तक फैलाता है।

चरण 1: गद्यांश का स्पष्ट कथन देखें आरंभ में कहा गया है कि कछुए का महत्त्व केवल जैव-विविधता तक सीमित नहीं रहता, वह हमारी संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा बन जाता है। यह कथन उसकी महत्ता का सबसे व्यापक और सीधा आधार देता है।

चरण 2: शेष विकल्पों की सीमा समझें (A) निःशब्द मंद गति उसकी चाल का गुण है। (B) शांत स्वभाव उसके व्यवहार की विशेषता है। (C) जैव-विविधता का अंग होना सही है, पर लेखक स्वयं कहता है कि उसका महत्त्व इससे आगे जाता है। इसलिए ये विकल्प पूरे

आशय को व्यक्त नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष कछुए की महत्ता का मुख्य आधार संस्कृति, चेतना और पर्यावरण की आत्मा होना है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: केवल शब्द के बाद दी गई सीमा और उससे आगे रखे गए व्यापक कथन को देखकर मुख्य विचार चुनें।

2(ii). जैव-विविधता से अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) सभी प्रकार के जीवन की विविधता
- (B) पेड़-पौधों की विभिन्न प्रजातियाँ
- (C) सूक्ष्म जीवों की विभिन्न प्रजातियाँ
- (D) पशु-पक्षियों के जीवन की विविधता

सही उत्तर: (A) सभी प्रकार के जीवन की विविधता

हल:

अवधारणा:

- जैव का संबंध जीवन से और विविधता का संबंध उसके अनेक प्रकारों से है।
- जैव-विविधता में पौधे, पशु-पक्षी और सूक्ष्मजीव सहित सभी प्रकार का जीवन सम्मिलित होता है।

चरण 1: शब्द का व्यापक अर्थ समझें जैव-विविधता किसी एक जीव-समूह तक सीमित नहीं है। इसका आशय विभिन्न प्रकार के जीवों और जीवन-रूपों की विविधता से है। इसलिए सभी प्रकार के जीवन की विविधता बताने वाला विकल्प पूरे अर्थ को समेटता है।

चरण 2: सीमित विकल्पों को हटाएँ (B) केवल पेड़-पौधों, (C) केवल सूक्ष्मजीवों और (D) केवल पशु-पक्षियों की विविधता बताता है। ये सभी जैव-विविधता के हिस्से हैं, पर इनमें से कोई अकेला उसकी संपूर्ण परिभाषा नहीं है। गद्यांश में कछुए की चर्चा भी इसी व्यापक जीवन-जगत के संदर्भ में है।

चरण 3: निष्कर्ष जैव-विविधता से अभिप्राय सभी प्रकार के जीवन की विविधता है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा वाले विकल्पों में ऐसा व्यापक उत्तर चुनें जिसमें पौधे, पशु-पक्षी और सूक्ष्मजीव सभी आ सकें।

2(iii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : समय की रेत पर अपने धैर्य और दीर्घायु के चिह्न छोड़ने वाले कछुओं का जीवन आज संकट में है।

कारण : उन्होंने हिमयुगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेला है।

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
- (B) कारण सही है, किंतु कथन गलत है।
- (C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की गलत व्याख्या करता है।
- (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (C) कथन सही है, किंतु कारण, कथन की गलत व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता को गद्यांश के आधार पर अलग-अलग परखना चाहिए।
- दोनों बातें सत्य होने पर भी कारण का कथन से वास्तविक संबंध जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें गद्यांश में बताया गया है कि लगभग 60 फीसदी कछुआ प्रजातियाँ संकटग्रस्त हैं। इसलिए कछुओं का जीवन आज संकट में होने का कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचें गद्यांश में स्पष्ट है कि कछुओं ने हिमयुगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों को झेला है। अतः कारण में दी गई ऐतिहासिक बात भी सही है।

चरण 3: व्याख्या का संबंध परखें पुराने प्राकृतिक परिवर्तनों को झेलना वर्तमान संकट का कारण नहीं है। आज का संकट मानवीय लालच, लापरवाही, प्रदूषण और हस्तक्षेप से उत्पन्न हुआ है। इसलिए (A) गलत है क्योंकि दोनों बातें असत्य नहीं हैं; (B) गलत है क्योंकि कथन सत्य है; (D) गलत है क्योंकि कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता।

चरण 4: निष्कर्ष कथन सही है, किंतु दिया गया कारण वर्तमान संकट की सही व्याख्या नहीं करता। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: दो सत्य वाक्यों को देखकर सही व्याख्या न मानें; जाँचें कि दूसरा वाक्य पहले का कारण वास्तव में बताता है या नहीं।

2(iv). 'मौन शक्ति की एक अलग भाषा है' – आशय स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ स्पष्ट करते समय शब्दों के शाब्दिक अर्थ के साथ गद्यांश का प्रसंग समझना आवश्यक है।
- यहाँ मौन शक्ति का संबंध कछुए के धैर्य, स्थिरता और कर्म से है।

चरण 1: मौन और शक्ति का संबंध समझें गद्यांश में कछुए को शांत, किंतु मजबूत प्रहरी कहा गया है। उसका करोड़ों वर्षों तक बने रहना बताता है कि शक्ति का प्रमाण शोर या अपनी प्रशंसा करना नहीं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में धैर्यपूर्वक टिके रहना है। मौन यहाँ निष्क्रियता का संकेत नहीं है।

चरण 2: कर्म के माध्यम से व्यक्त संदेश पहचानें कछुआ बिना कुछ कहे अपने अस्तित्व और धीमी, स्थायी जीवन-शैली से निरंतर प्रयास का महत्त्व सिखाता है। उसके कर्म और दीर्घजीवन से मिलने वाली सीख ही उसकी भाषा है। इसलिए गद्यांश में शब्दों की अपेक्षा कर्म द्वारा प्रकट होने वाली सामर्थ्य पर बल दिया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का आशय है कि वास्तविक शक्ति शोर या शब्दों की मोहताज नहीं होती। कछुआ अपने धैर्य, निरंतर कर्म और दीर्घ अस्तित्व से चुपचाप जीवन में स्थिरता तथा संघर्षशीलता का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में पहले मौन का अर्थ स्पष्ट करें, फिर कछुए के धैर्य और कर्म से उस अर्थ को जोड़ें।

2(v). “दौड़ना ज़रूरी नहीं, टिके रहना ज़्यादा ज़रूरी है” – से क्या अभिप्राय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंगानुसार किसी सूक्ति का अर्थ उसके केंद्रीय संदेश और उदाहरण से स्पष्ट किया जाता है।
- कछुए की धीमी किंतु स्थायी जीवन-शैली निरंतरता और धैर्य का प्रतीक है।

चरण 1: तेजी और निरंतरता का अंतर समझें दौड़ना यहाँ केवल तेज चलना नहीं, बल्कि जल्दबाजी में आगे बढ़ने का प्रतीक है। टिके रहना कठिनाइयों के बीच धैर्यपूर्वक लगातार प्रयास करते रहना है। गद्यांश जीवन की स्थिरता को महत्त्व देता है; केवल गति को सफलता का अंतिम आधार नहीं मानता।

चरण 2: कछुए के उदाहरण से आशय स्पष्ट करें कछुओं ने धीमी चाल के बावजूद हिमयुगों, महाविनाशों और भूगर्भीय परिवर्तनों का सामना करके अपना अस्तित्व बनाए रखा। इससे स्पष्ट है कि परिस्थितियों के बीच टिके रहने की क्षमता, संयम और निरंतरता का विशेष

महत्त्व है। कथन आलस्य अपनाने को नहीं कहता, बल्कि धैर्य और लगातार कर्म की प्रेरणा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष अभिप्राय है कि जीवन में केवल तेजी से आगे बढ़ना पर्याप्त नहीं है। कछुए की तरह धैर्य, स्थिरता और निरंतर प्रयास के साथ कठिन परिस्थितियों में अपना अस्तित्व बनाए रखना अधिक महत्वपूर्ण है।

त्वरित सुझाव: इस कथन की व्याख्या में धीमी चाल को आलस्य न कहें; उसे कछुए की निरंतरता और स्थायी अस्तित्व से जोड़ें।

2(vi). कछुओं के संरक्षण हेतु किन्हीं दो उपायों का उल्लेख कीजिए।

[1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संरक्षण के उपाय गद्यांश में बताए गए संकटों को दूर करने वाले होने चाहिए।
- यहाँ प्रदूषण और समुद्री तटों का अतिक्रमण कछुओं के लिए प्रमुख खतरे हैं।

चरण 1: पहला उपाय बताएँ जल और समुद्री तटों पर प्लास्टिक प्रदूषण रोकना चाहिए। गद्यांश में प्लास्टिक तथा जल प्रदूषण को संकट का कारण बताया गया है; इसलिए इन्हें कम करना संरक्षण का सीधा उपाय है।

चरण 2: दूसरा उपाय बताएँ कछुओं के अंडे देने वाले समुद्री तटों को अतिक्रमण और अनावश्यक मानवीय हस्तक्षेप से सुरक्षित रखना चाहिए। इससे उनके प्रजनन-स्थलों की सुरक्षा होगी।

चरण 3: निष्कर्ष दो उपाय हैं: (1) जल और तटों पर प्लास्टिक प्रदूषण रोकना। (2) अंडे देने वाले समुद्री तटों को अतिक्रमण और मानवीय हस्तक्षेप से बचाना।

त्वरित सुझाव: गद्यांश के दो अलग संकट चुनकर प्रत्येक को रोकने का उपाय लिखें; एक ही उपाय को दो रूपों में न दोहराएँ।

2(vii). प्रवासी कछुए भारत में क्यों आते हैं ? इन्हें किससे खतरा है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बहुखंडी प्रश्न में आने का उद्देश्य और खतरे, दोनों का स्पष्ट उत्तर आवश्यक है।
- उत्तर गद्यांश में मादा ऑलिव रिडले के प्रवास के दिए गए विवरण पर आधारित होना चाहिए।

चरण 1: भारत आने का कारण बताएँ गद्यांश के अनुसार मादा ऑलिव रिडले कछुए हजारों किलोमीटर तैरकर अंडे देने के लिए भारत के ओडिशा तट पर आते हैं। अतः यहाँ आने का उद्देश्य प्रजनन है। उत्तर में केवल घूमने या भोजन खोजने की बात जोड़ना गद्यांश से समर्थित नहीं होगा।

चरण 2: खतरों का उल्लेख करें इन प्रवासी कछुओं को जल और प्रकाश प्रदूषण तथा मानवीय हस्तक्षेप से भारी खतरा है। गद्यांश व्यापक रूप से प्लास्टिक प्रदूषण, समुद्री तटों का अतिक्रमण, अवैध व्यापार और जलवायु परिवर्तन को भी कछुओं के संकट के प्रमुख कारण बताता है। प्रश्न के दूसरे भाग में विशेष रूप से प्रवासी कछुओं के संदर्भ में दिए गए खतरों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष मादा ऑलिव रिडले जैसे प्रवासी कछुए अंडे देने के लिए ओडिशा के समुद्री तट पर आते हैं। इन्हें जल और प्रकाश प्रदूषण, मानवीय हस्तक्षेप तथा तटों के अतिक्रमण जैसे खतरों का सामना करना पड़ता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो हिस्सों में बाँटें: पहले अंडे देने का उद्देश्य और ओडिशा तट, फिर प्रदूषण तथा मानवीय हस्तक्षेप।

3(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

समाचार लेखन और ककारों के बीच का संबंध स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार लेखन में घटना की संपूर्ण और तथ्यपरक जानकारी प्रस्तुत की जाती है।
- छह ककार हैं: क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे; ये पाठक की मूल जिज्ञासाओं को स्पष्ट करते हैं।

चरण 1: छह ककारों की भूमिका समझें क्या से घटना, कब से समय, कहाँ से स्थान और कौन से संबंधित व्यक्ति या पक्ष की जानकारी मिलती है। क्यों और कैसे घटना के कारण तथा घटित होने की प्रक्रिया स्पष्ट करते हैं। इन प्रश्नों से समाचार का तथ्यपरक ढाँचा तैयार होता है और कोई आवश्यक पहलू छूटने की आशंका घटती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों का उत्तर लिखें समाचार लेखन छह ककारों—क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे—पर आधारित होता है। ये घटना, समय, स्थान, संबंधित व्यक्ति, कारण और प्रक्रिया की जानकारी देते हैं। इनके समुचित उत्तर समाचार को पूर्ण, स्पष्ट और तथ्यपरक बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष छह ककार समाचार की आधारभूमि हैं। इनके उत्तरों से पाठक को घटना का आवश्यक विवरण मिलता है और समाचार पूर्ण, स्पष्ट तथा तथ्यपरक बनता है।

त्वरित सुझाव: समाचार के किसी उदाहरण पर क्या, कब, कहाँ, कौन, क्यों और कैसे पूछें; इन्हीं उत्तरों से उसका तथ्यात्मक ढाँचा तैयार करें।

3(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

विचारपरक लेखन से क्या अभिप्राय है ? इनका क्या महत्त्व है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारपरक लेखन में किसी सामाजिक, राजनीतिक या सांस्कृतिक विषय का तर्क और विश्लेषण के आधार पर विवेचन किया जाता है।
- इसका उद्देश्य पाठक को केवल घटना बताना नहीं, उसके कारणों, प्रभावों और विभिन्न पक्षों पर सोचने में सहायता देना है।

चरण 1: अर्थ को पहचानें विचारपरक लेखन में लेखक किसी मुद्दे पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। वह अपने मत को तथ्यों, तर्कों और उदाहरणों से पुष्ट करता है। इसलिए इसे केवल सूचनाओं के संकलन या भावनात्मक प्रतिक्रिया तक सीमित नहीं किया जा सकता।

चरण 2: महत्त्व स्पष्ट करें ऐसा लेखन मुद्दे की पृष्ठभूमि और उसके व्यापक प्रभाव समझाता है। इससे पाठक में विवेकपूर्ण निर्णय लेने और स्वतंत्र राय बनाने की क्षमता विकसित होती है। उत्तर में परिभाषा और उपयोगिता दोनों का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष विचारपरक लेखन किसी विषय का तथ्यों और तर्कों के आधार पर विश्लेषण तथा लेखक के दृष्टिकोण की प्रस्तुति है। यह पाठकों को मुद्दे के विभिन्न पक्ष समझाता है, उनकी आलोचनात्मक समझ विकसित करता है और विवेकपूर्ण जनमत बनाने में सहायक होता है।

त्वरित सुझाव: पहले तर्कपूर्ण विश्लेषण के रूप में परिभाषा दें, फिर पाठक की समझ और जनमत पर उसका प्रभाव लिखें।

3(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

नाटक में दृश्यों की क्या भूमिका होती है ? स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाटक दृश्य माध्यम है; उसकी कथा मंच पर पात्रों की क्रिया, संवाद और अभिनय से आगे बढ़ती है।
- दृश्य स्थान, समय और परिस्थिति को मूर्त करते हुए कथानक की क्रमिक प्रगति में सहायता करते हैं।

चरण 1: दृश्य की भूमिका समझें नाटक केवल पढ़ने या सुनने के लिए नहीं, मंच पर प्रस्तुत करने के लिए भी लिखा जाता है। दृश्य घटनाओं और पात्रों के व्यवहार को दर्शक के सामने साकार करता है। इससे कथा का परिवेश तथा घटना की परिस्थिति स्पष्ट होती है।

चरण 2: कथानक से संबंध जोड़ें प्रत्येक सार्थक दृश्य नाटकीय क्रिया को आगे बढ़ाता है और पात्रों के संबंध, संघर्ष या मनःस्थिति को व्यक्त करता है। दृश्यों का सुव्यवस्थित क्रम कथा में गति और प्रभाव उत्पन्न करता है तथा दर्शकों की रुचि बनाए रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष दृश्य नाटक की घटनाओं, परिवेश और पात्रों के व्यवहार को मंच पर साकार करते हैं। उनके माध्यम से कथानक आगे बढ़ता है तथा पात्रों के संबंध और संघर्ष उभरते हैं। दृश्यों का सुव्यवस्थित क्रम नाटक को गति, प्रभाव और रोचकता प्रदान करता है।

त्वरित सुझाव: दृश्यों का उत्तर लिखते समय मंचीय प्रस्तुति, कथानक की गति और संघर्ष के विकास को साथ जोड़ें।

3(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित क्यों रखी जाती है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक पूर्णतः श्रव्य माध्यम है; श्रोता पात्रों को देख नहीं सकता और उनकी आवाज़ से पहचानता है।
- पात्रों की सीमित संख्या संवादों की स्पष्टता और घटनाक्रम की सहज समझ बनाए रखती है।

चरण 1: माध्यम की सीमा पहचानें मंच या चलचित्र में पात्र का चेहरा, वेशभूषा और शारीरिक गतिविधि पहचान में मदद करते हैं। रेडियो पर ये दृश्य संकेत उपलब्ध नहीं होते। वहाँ संवाद, स्वर और ध्वनियाँ ही पात्र की उपस्थिति तथा उसकी भूमिका का परिचय देते हैं।

चरण 2: अधिक पात्रों से होने वाली कठिनाई बताएँ बहुत से पात्र होने पर श्रोता उनकी आवाज़ों और आपसी संबंधों में अंतर करने में उलझ सकता है। सीमित पात्र होने से वह पहचान और घटनाक्रम पर ध्यान बनाए रखता है। इससे कथा सुनने में सरल तथा नाटकीय प्रभाव अधिक स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाटक में श्रोता पात्रों को देख नहीं सकता; वह उनकी आवाज़ और संवाद से पहचानता है। अधिक पात्र होने पर आवाज़ों तथा संबंधों में भ्रम हो सकता है। इसलिए पात्र सीमित रखे जाते हैं, ताकि कथानक स्पष्ट रहे और श्रोता सहजता से समझ सके।

त्वरित सुझाव: उत्तर का कारण दृश्य संकेतों का अभाव है; उससे आवाज़ों में भ्रम और सीमित पात्रों की आवश्यकता समझाएँ।

3(v). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन’ पाठ में लेखन कर्म को खुले मैदान में दौड़ लगाने, कुलाँचे भरने की तरह क्यों कहा गया है ?
तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय पर लेखन पूर्वनिर्धारित ढाँचे के स्थान पर स्वतंत्र सोच, कल्पना और निजी अनुभवों को अवसर देता है।
- खुले मैदान में दौड़ना और कुलाँचे भरना रचनात्मक स्वतंत्रता तथा नए विचारों की खोज का रूपक है।

चरण 1: उपमा का आशय समझें खुले मैदान में दौड़ते समय व्यक्ति किसी संकरे रास्ते तक सीमित नहीं होता। उसी प्रकार नए और अप्रत्याशित विषय पर लेखक को तैयार उत्तर या रटे हुए ढाँचे का सहारा नहीं मिलता। उसे अपनी दृष्टि से विषय के नए संबंध और अर्थ खोजने होते हैं।

चरण 2: लेखन की रचनात्मकता से जोड़ें ऐसे विषय लेखक को कल्पना, अनुभव और विचार की अलग-अलग दिशाओं में जाने की स्वतंत्रता देते हैं। इससे मौलिक अभिव्यक्ति विकसित होती है और लेखन का अभ्यास अधिक सहज तथा आनंदपूर्ण बनता है। यह स्वतंत्रता विषय से असंबद्ध बातें लिखने की छूट नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष नए और अप्रत्याशित विषय लेखक को रटे हुए ढाँचे से मुक्त होकर सोचने का अवसर देते हैं। वह अपने अनुभवों और कल्पना के सहारे नई दिशाओं में विचार करता है। इसी स्वतंत्रता, मौलिकता और सृजन के आनंद के कारण लेखन को खुले मैदान में कुलाँचे भरना कहा गया है।

त्वरित सुझाव: खुले मैदान की स्वतंत्रता को लेखन की स्वतंत्र कल्पना से जोड़ें और मौलिक अभिव्यक्ति का परिणाम बताएँ।

4(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

आप क.ख.ग. समाचार पत्र के पत्रकार देव/देवांशी हैं। हाल ही में आपने अ.ब.स. पशु देखभाल गृह का दौरा किया है। उसमें पशु-पक्षियों के साथ होने वाले व्यवहार और वहाँ की सुव्यवस्था को देखकर आपको सुखद अनुभूति हुई। इसका विवरण समाचार पत्र में प्रकाशित करने के लिए एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रिपोर्ट में किसी देखी गई घटना या व्यवस्था का स्पष्ट, तथ्यपरक और क्रमबद्ध विवरण दिया जाता है। आकर्षक शीर्षक, संवाददाता का नाम तथा स्थान और दिनांक इसके आवश्यक अंग हैं।
- इस प्रश्न में पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशील व्यवहार और देखभाल गृह की सुव्यवस्था प्रमुख विषय हैं। विवरण पत्रकार देव की दृष्टि से लगभग 80 शब्दों में देना है।

चरण 1: रिपोर्ट का प्रारूप और सामग्री तय करें पहले विषयानुकूल शीर्षक और संवाददाता का नाम दें। फिर स्थान और दिनांक के साथ दौरे का उल्लेख करें। मुख्य विवरण में पशु-पक्षियों के साफ आवास, भोजन-पानी, चिकित्सा तथा कर्मचारियों के स्नेहपूर्ण व्यवहार को क्रम से रखें। अंतिम वाक्य में दौरे की सुखद अनुभूति व्यक्त करें। रिपोर्ट को निजी डायरी या पत्र का रूप न दें।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में नमूना रिपोर्ट पशु-पक्षियों के लिए स्नेह और सुरक्षा का आश्रय

देव, संवाददाता, क.ख.ग. समाचार पत्र

नई दिल्ली, 16 मार्च। अ.ब.स. पशु देखभाल गृह के हालिया दौरे में पशु-पक्षियों की सुव्यवस्थित देखभाल का सुखद दृश्य देखने को मिला। स्वच्छ बाड़ों में पर्याप्त हवा और प्रकाश की व्यवस्था थी। सभी जीवों को समय पर पौष्टिक भोजन तथा स्वच्छ पानी दिया जा रहा था। घायल पशुओं का उपचार और नियमित स्वास्थ्य परीक्षण हो रहा था। कर्मचारी उनके साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार कर रहे थे। परिसर की साफ-सफाई और अनुशासित कार्यप्रणाली सराहनीय थी। यह गृह जीवों के प्रति मानवीय संवेदना का प्रेरक उदाहरण है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत रिपोर्ट शीर्षक, संवाददाता, स्थान-दिनांक तथा तथ्यपरक विवरण के माध्यम से पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशील

व्यवहार और देखभाल गृह की सुव्यवस्था को उभारती है।

त्वरित सुझाव: रिपोर्ट में शीर्षक और संवाददाता अवश्य दें तथा भोजन, सफाई, उपचार और व्यवहार जैसे ठोस बिंदुओं से विवरण को स्पष्ट बनाएं।

4(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

सीधा पिरामिड और उल्टा पिरामिड शैली में क्या अंतर है ? स्पष्ट कीजिए।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सीधे पिरामिड में विवरण आरंभ से विकसित होकर चरम बिंदु की ओर बढ़ता है। इसमें पाठक की उत्सुकता बनी रहती है और महत्वपूर्ण निष्कर्ष अंत में सामने आ सकता है।
- उल्टे पिरामिड में सबसे महत्वपूर्ण सूचना पहले आती है। इसके बाद कम महत्वपूर्ण विवरण और अंत में पृष्ठभूमि दी जाती है। समाचार लेखन में यह क्रम विशेष उपयोगी है।

चरण 1: अंतर के आधार पहचानें तुलना में केवल सूचना के क्रम को उलटा बता देना पर्याप्त नहीं है। स्पष्ट करें कि सीधे पिरामिड का क्रम आरंभ, विकास और चरम की ओर जाता है, जबकि उल्टे पिरामिड का आधार सूचना का घटता महत्त्व है। फिर पाठक पर प्रभाव और समाचार के संपादन में उपयोगिता का अंतर जोड़ें। यहाँ किसी ज्यामितीय आकृति का वर्णन नहीं, लेखन की संरचना समझानी है। दोनों शैलियों की तुलना एक ही आधार पर करें और समाचार पढ़ने वाले पाठक की तत्काल सूचना पाने की आवश्यकता को ध्यान में रखें।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर सीधा पिरामिड शैली में कथन आरंभ और पृष्ठभूमि से क्रमशः विकसित होकर चरम बिंदु तक पहुँचता है। मुख्य बात प्रायः अंत में खुलती है, जिससे पाठक की उत्सुकता बनी रहती है। उल्टा पिरामिड शैली में सर्वाधिक महत्वपूर्ण सूचना पहले, उससे कम महत्वपूर्ण विवरण बाद में और पृष्ठभूमि अंत में दी जाती है। इसका आरंभ मुखड़े या इंट्रो से होता है। यह समाचार लेखन की प्रमुख शैली है; पाठक तुरंत मुख्य तथ्य जान लेता है और आवश्यकता पड़ने पर अंतिम अंश हटाने से मूल समाचार सुरक्षित रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष मुख्य अंतर सूचना के संयोजन में है: सीधे पिरामिड में घटनाक्रम चरम की ओर बढ़ता है; उल्टे पिरामिड में सूचना सबसे अधिक महत्वपूर्ण से कम महत्वपूर्ण की ओर रखी जाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय सीधे पिरामिड के लिए आरंभ से चरम और उल्टे पिरामिड के लिए मुख्य सूचना से पृष्ठभूमि का क्रम याद रखें।

4(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

पत्रकारिता के क्षेत्र में 'डेस्क' से क्या अभिप्राय है ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में डेस्क समाचार संस्था का संपादकीय विभाग है, जहाँ प्राप्त समाचारों को प्रकाशन या प्रसारण के योग्य बनाया जाता है।
- रिपोर्टर समाचार जुटाता है, जबकि डेस्क उसकी तथ्यगत जाँच, भाषा-संपादन, चयन और प्रस्तुति का दायित्व निभाती है।

चरण 1: परिभाषा और कार्यों का चयन उत्तर में पहले डेस्क को संपादकीय विभाग के रूप में पहचानना चाहिए। फिर समाचारों के चयन, तथ्य-जाँच, भाषा-सुधार, शीर्षक और प्रस्तुति का उल्लेख करना चाहिए। केवल कार्यालय की मेज़ कहना उचित नहीं होगा, क्योंकि यहाँ शब्द का अर्थ पत्रकारिता की एक कार्य-इकाई है।

चरण 2: भूमिका का अंतर समझना समाचार का संकलन और उसका संपादन अलग कार्य हैं। संवाददाता घटनास्थल से जानकारी लाता है; डेस्क उस जानकारी को पाठक के लिए व्यवस्थित करती है। इसलिए उत्तर में समाचार जुटाने के बजाय उसकी विश्वसनीयता और प्रस्तुति सुनिश्चित करने पर बल दिया गया है। शीर्षक देना भी इसी संपादकीय प्रक्रिया का हिस्सा है।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर पत्रकारिता में 'डेस्क' समाचार-पत्र या समाचार संस्था के उस संपादकीय विभाग को कहते हैं, जहाँ संवाददाताओं, समाचार एजेंसियों तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त समाचारों का चयन और संपादन होता है। यहाँ उपसंपादक समाचारों के तथ्यों की जाँच करते हैं, भाषा तथा वर्तनी सुधारते हैं और अनावश्यक अंश हटाते हैं। वे उपयुक्त शीर्षक लगाते हैं तथा समाचार का महत्त्व देखकर उसकी जगह और प्रस्तुति तय करते हैं। इस प्रकार डेस्क कच्ची समाचार-सामग्री को स्पष्ट, विश्वसनीय और प्रकाशन या प्रसारण योग्य रूप देती है।

चरण 4: निष्कर्ष डेस्क पत्रकारिता की संपादकीय कार्य-इकाई है, जो प्राप्त समाचार-सामग्री को जाँचकर और सँवारकर पाठकों या दर्शकों तक पहुँचाने योग्य बनाती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में 'संपादकीय विभाग' के साथ चयन, तथ्य-जाँच, भाषा-सुधार और शीर्षक का उल्लेख करें; डेस्क को केवल रिपोर्टिंग का काम न बताएँ।

4(iv). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए :

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय सबसे बड़ी समस्या क्या होती है और इसे कैसे हल किया जा सकता है ?

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी वर्णनप्रधान विधा हो सकती है, जबकि नाटक में घटनाएँ और भाव मंच पर दृश्य, क्रिया तथा संवाद के माध्यम से व्यक्त होते हैं।
- नाट्य रूपांतरण में मूल कथ्य सुरक्षित रखते हुए कथावाचक के वर्णन और पात्रों की आंतरिक अनुभूतियों को मंचनीय बनाना पड़ता है।

चरण 1: मूल समस्या पहचानना कहानी में लेखक या कथावाचक वातावरण, मनःस्थिति और घटनाओं की व्याख्या कर सकता है। मंच पर केवल ऐसा विवरण पढ़ देना प्रभावी नाटकीय प्रस्तुति नहीं बनता। विशेष कठिनाई उन भावों और विचारों को सामने लाने में होती है जो पात्र के मन में घटते हैं। इसलिए वर्णन को दृश्यात्मक क्रिया में बदलना उत्तर का केंद्रीय बिंदु है।

चरण 2: समाधान की योजना मूल कथा की आवश्यक घटनाएँ चुनकर उन्हें दृश्यों में बाँटना चाहिए। मनोभावों को उपयुक्त संवाद, स्वगत कथन, अभिनय और हावभाव से व्यक्त किया जा सकता है। प्रकाश और ध्वनि वातावरण बनाने में सहायक होते हैं। इन साधनों का प्रयोग करते समय कहानी का मूल भाव बदलना नहीं चाहिए और अनावश्यक विवरणों को संक्षिप्त करना चाहिए।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में आदर्श उत्तर कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय सबसे बड़ी समस्या उसके वर्णनात्मक अंशों और पात्रों के मनोभावों को मंच पर दृश्य रूप देना होती है। कहानीकार जिन बातों को वर्णन से कह देता है, उन्हें नाटक में संवाद और अभिनय से दिखाना पड़ता है। इसे हल करने के लिए आवश्यक घटनाओं को दृश्यों में बाँटकर वर्णन को पात्रों के संवादों में बदला जाता है। आंतरिक द्वंद्व को स्वगत कथन, हावभाव तथा अभिनय से व्यक्त किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में मूल कथ्य सुरक्षित रखना आवश्यक है।

चरण 4: निष्कर्ष वर्णन और आंतरिक अनुभूतियों को मंचनीय दृश्य, संवाद तथा अभिनय में बदलना मुख्य चुनौती है; मूल कथ्य सुरक्षित रखकर उपयुक्त नाटकीय साधनों से इसका समाधान किया जाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को 'वर्णन से दृश्य' के सूत्र पर केंद्रित रखें और संवाद, स्वगत कथन तथा अभिनय को समस्या के ठोस समाधान के रूप में लिखें।

5(i). निम्नलिखित दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

तारों भरी रात का सौंदर्य

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तारों भरी रात का वर्णन दृश्य, अनुभूति और कल्पना के मेल से सजीव बनता है। चमकते तारे, शांत वातावरण और मन की प्रतिक्रिया इस लेख के मुख्य आधार हैं।
- रचनात्मक लेख में उपयुक्त शीर्षक, विषयानुकूल भाषा, विचारों का क्रम और लगभग 120 शब्दों की सीमा का पालन आवश्यक है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति आरंभ में रात का दृश्य, मध्य में तारों की चमक तथा उसके मन पर प्रभाव और अंत में प्रकृति से प्राप्त शांति का उल्लेख करें। विषय से हटकर खगोल विज्ञान की जानकारी देने के बजाय व्यक्तिगत अनुभूति को प्रमुख रखें।

चरण 2: भाषा और विषयवस्तु का चयन छोटे और स्पष्ट वाक्य लिखें। उपमा और बिंब का प्रयोग स्वाभाविक हो, जिससे दृश्य पाठक के सामने उभर सके। आरंभ, मध्य और अंत को आपस में जोड़ें तथा एक ही विचार को बार-बार दोहराने से बचें। शीर्षक के बाद पूरा लेख अनुच्छेद में प्रस्तुत करें। उदाहरण के लिए, तारों को दीपों जैसा बताने वाली उपमा दृश्य को उजला बनाती है और झींगुरों की ध्वनि रात की शांति का अनुभव कराती है। अंतिम वाक्य में आशा का भाव पहले वर्णित अँधेरे और प्रकाश से जुड़ता है।

चरण 3: पूर्ण नमूना रचनात्मक लेख तारों भरी रात का सौंदर्य

संध्या का धुंधलका मिटते ही आकाश में असंख्य तारे जगमगाने लगे। लगा, किसी ने नीले मखमल पर चाँदी के नन्हे दीप सजा दिए हों। मैं छत पर बैठा उस अद्भुत दृश्य को निहार रहा था। ठंडी हवा के झोंके दिनभर की थकान दूर कर रहे थे। दूर कहीं झींगुरों की आवाज़ रात की नीरवता को संगीत दे रही थी। कभी कोई तारा अधिक चमकता तो लगता, वह मुझे कोई कहानी सुनाना चाहता है। दादी की सुनाई ध्रुव तारे की कथा याद आ गई। शहर की चकाचौंध से दूर इस निर्मल आकाश ने मन को अनोखी शांति दी। तारों भरी रात ने सिखाया कि अँधेरे में भी प्रकाश की छोटी किरण आशा जगाती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार लेख विषय के केंद्रीय अनुभव को सजीव चित्रण, क्रमबद्ध प्रस्तुति और व्यक्तिगत अनुभूति के साथ लगभग 120 शब्दों में व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: दृश्य-वर्णन में देखने, सुनने और महसूस करने के अनुभव जोड़ें; अंत की अनुभूति को उसी दृश्य से स्वाभाविक रूप से निकालें।

5(ii). निम्नलिखित दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

पुस्तक मेले में पुस्तक का लोकार्पण

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में पुस्तक मेले के वातावरण और पुस्तक के लोकार्पण के अनुभव को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करना है। मंच, लेखक, पाठक और नई पुस्तक से जुड़ी उत्सुकता वर्णन को सजीव बनाती है।
- रचनात्मक लेख में उपयुक्त शीर्षक, विषयानुकूल भाषा, विचारों का क्रम और लगभग 120 शब्दों की सीमा का पालन आवश्यक है।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति मेले के वातावरण से शुरुआत करें। इसके बाद लोकार्पण के क्षण, लेखक की प्रतिक्रिया तथा पाठकों के उत्साह का वर्णन करें। अंत में पुस्तकों के प्रति अपनी अनुभूति जोड़ें। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए समाचार जैसी औपचारिक विवरण-सूची आवश्यक नहीं है।

चरण 2: भाषा और विषयवस्तु का चयन छोटे और स्पष्ट वाक्य लिखें। उपमा और बिंब का प्रयोग स्वाभाविक हो, जिससे दृश्य पाठक के सामने उभर सके। आरंभ, मध्य और अंत को आपस में जोड़ें तथा एक ही विचार को बार-बार दोहराने से बचें। शीर्षक के बाद पूरा लेख अनुच्छेद में प्रस्तुत करें।

चरण 3: पूर्ण नमूना रचनात्मक लेख पुस्तक मेले में पुस्तक का लोकार्पण

पुस्तक मेले में प्रवेश करते ही लगा, शब्दों का उत्सव साकार हो उठा है। रंगीन पुस्तकों से सजे स्टॉलों के बीच एक छोटे मंच पर नई कहानी-पुस्तक का लोकार्पण होने वाला था। पाठक उत्सुकता से कुर्सियों पर बैठ रहे थे। जैसे ही अतिथियों ने पुस्तक का आवरण हटाया, सभागार तालियों से गूँज उठा। लेखक के चेहरे पर प्रसन्नता और संकोच एक साथ झलक रहे थे। उन्होंने बताया कि इन कहानियों में साधारण लोगों के असाधारण अनुभव बसे हैं। एक कहानी का अंश सुनते हुए लगा, पात्र हमारे आसपास ही जीवित हैं। कार्यक्रम के बाद पाठक हस्ताक्षरित प्रतियाँ लेने उमड़ पड़े। मैं भी पुस्तक लेकर लौटा। उस दिन समझ आया कि लोकार्पण केवल पुस्तक का अनावरण नहीं, लेखक और पाठक के संवाद का आरंभ है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार लेख विषय के केंद्रीय अनुभव को सजीव चित्रण, क्रमबद्ध प्रस्तुति और व्यक्तिगत अनुभूति के साथ लगभग 120 शब्दों में व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: आयोजन का वर्णन केवल घटनाओं की सूची न बने; एक सजीव क्षण और उससे उपजी अनुभूति जोड़कर लेख को प्रभावी बनाएँ।

5(iii). निम्नलिखित दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का बढ़ता वर्चस्व

[6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय को एक सुसंगत दृष्टि से प्रस्तुत किया जाता है। आरंभ, विस्तार और निष्कर्ष का स्वाभाविक संबंध होना चाहिए।
- भारत की अंतर्राष्ट्रीय भूमिका को सहयोग, विज्ञान, संस्कृति और उत्तरदायित्व से जोड़ते हुए लगभग 120 शब्दों में विचार व्यक्त करना उचित है।

चरण 1: लेख का प्रारूप निर्धारित करना ऊपर विषय के अनुरूप शीर्षक रखा जाएगा। रचनात्मक लेख में पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर आवश्यक नहीं हैं। आरंभ में भारत की बदलती छवि आएगी; मध्य में उसके बढ़ते प्रभाव के ठोस क्षेत्र और अंत में इस प्रभाव का मानवीय लक्ष्य रखा जाएगा। भाषा सहज, प्रभावपूर्ण और विषय पर केंद्रित रहेगी।

चरण 2: विचारों की रूपरेखा बनाना भारत की आवाज़ को केवल शक्ति प्रदर्शन से नहीं, साझेदारी से जोड़ेंगे। योग, विज्ञान, डिजिटल तकनीक, अंतरिक्ष अनुसंधान और संकट में सहायता उसके प्रभाव के उदाहरण होंगे। विकासशील देशों की चिंताओं, जलवायु न्याय तथा शांति का उल्लेख लेख को संतुलित बनाएगा। अप्रमाणित आँकड़े या अतिशयोक्तिपूर्ण दावे देने के स्थान पर इन क्षेत्रों की भूमिका समझाई जाएगी।

चरण 3: पूर्ण रचनात्मक लेख विश्व मंच पर भारत की सशक्त उपस्थिति

विश्व मंच पर आज भारत की आवाज़ अधिक आत्मविश्वास से सुनाई देती है। यह स्वर केवल शक्ति का नहीं, सहयोग और साझी प्रगति का भी है। योग से लेकर अंतरिक्ष अनुसंधान तक भारत की उपलब्धियाँ दुनिया का ध्यान आकर्षित करती हैं। डिजिटल तकनीक, विज्ञान और उद्यमिता उसकी नई पहचान गढ़ रहे हैं। संकट के समय सहायता पहुँचाना उसकी मानवीय दृष्टि को उजागर करता है। विकासशील देशों की चिंताओं को सामने रखकर भारत संवाद को व्यापक बनाता है। जलवायु न्याय और शांति के प्रश्नों पर उसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। फिर भी बढ़ता प्रभाव अपने साथ उत्तरदायित्व लाता है। शिक्षा, समानता और नवाचार को मजबूत करके ही यह प्रतिष्ठा स्थायी बनेगी। भारत का वास्तविक वर्चस्व दूसरों को दबाने में नहीं, सबको साथ लेकर आगे बढ़ने में है।

चरण 4: निष्कर्ष यह लेख भारत के बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव को उसकी उपलब्धियों, सहयोग की भावना और वैश्विक उत्तरदायित्व के साथ प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: लगभग 120 शब्दों के लेख में उपलब्धियों के साथ उत्तरदायित्व भी जोड़ें; इससे विषय संतुलित और प्रभावपूर्ण बनता है।

6. सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना

मैं पेंच को खोलने के बजाए

उसे बेतरह कसता चला जा रहा था

क्यों कि इस करतब पर मुझे

साफ़ सुनाई दे रही थी

तमाशबीनों की शाबाशी और वाह वाह !

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था

ज़ोर ज़बरदस्ती से

बात की चूड़ी मर गई

और वह भाषा में बेकार घूमने लगी !

हार कर मैंने उसे कील की तरह

उसी जगह ठोक दिया।

[5 अंक]

6(i). 'बात की चूड़ी मरना' से क्या अभिप्राय है ?

[1 अंक]

(A) बात का पकड़ में न आना

(B) बात का प्रभावहीन हो जाना

(C) कथ्य और माध्यम का तालमेल होना

(D) बात में कसाव और ताकत का होना

सही उत्तर: (B) बात का प्रभावहीन हो जाना

हल:

अवधारणा:

- कविता में पेंच और चूड़ी का रूपक भाषा तथा कथ्य के संबंध को समझाता है।
- अत्यधिक भाषिक सजावट से कथ्य की संप्रेषणीयता और प्रभाव समाप्त हो सकते हैं।

चरण 1: रूपक का आशय समझना पेंच की चूड़ी घिस जाने पर वह अपनी पकड़ खो देता है और बेकार घूमता है। इसी तरह 'बात की चूड़ी मर गई' के बाद बात का भाषा में बेकार घूमना बताता है कि उसका अर्थपूर्ण प्रभाव नष्ट हो गया है। यहाँ बात को पकड़ न पाने की प्रारंभिक कठिनाई नहीं, अभिव्यक्ति बिगड़ने का परिणाम व्यक्त हुआ है।

चरण 2: विकल्पों की तुलना करना (B) इस प्रभावहीनता को ठीक व्यक्त करता है। (A) में केवल बात पकड़ में न आने की स्थिति है। (C) कथ्य और माध्यम का सफल तालमेल तथा (D) कसाव और ताकत बताते हैं, जबकि उद्धृत पंक्तियाँ उनके नष्ट होने की स्थिति दिखाती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बात का प्रभावहीन हो जाना अभिप्रेत है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: 'बेकार घूमने लगी' को संकेत मानें; यह अभिव्यक्ति के प्रभाव और पकड़ खोने का परिणाम बताता है।

6(ii). निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :

कथन : कथ्य के भाव या अभिव्यक्ति के अनुरूप ही भाषा का चुनाव करना चाहिए।

कारण : भाषा के शब्द-जाल में फँसकर कथ्य की जीवंतता और सार्थकता नष्ट हो जाती है।

[1 अंक]

- (A) कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।
(B) कारण सही है, लेकिन कथन गलत है।
(C) कथन सही है, लेकिन कारण, कथन की गलत व्याख्या करता है।
(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- भाषा का चयन कथ्य की भावात्मक आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए।
- कथन और कारण में सत्यता के साथ कारण का व्याख्यात्मक संबंध भी जाँचना आवश्यक है।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचना कथन सही है। कविता में भाषा को बेतरह कसने से बात की जीवंत अभिव्यक्ति बाधित होती है। इसलिए भाव के अनुरूप सहज और संप्रेषणीय भाषा का चुनाव करना चाहिए।

चरण 2: कारण की सत्यता जाँचना कारण भी सही है। शब्दों के प्रदर्शन और भाषा के जाल में उलझने पर बात का मर्म खो सकता है। अंश में बात की चूड़ी मरना और भाषा में बेकार घूमना इसी निष्प्रभाविता का संकेत है।

चरण 3: कारण और कथन का संबंध समझना कारण बताता है कि अनुचित भाषिक जटिलता कथ्य की जीवंतता क्यों नष्ट करती है; इसी से कथ्य के अनुरूप भाषा चुनने की आवश्यकता सिद्ध होती है। अतः (A) और (B) सत्यता का गलत निर्णय देते हैं तथा (C) सही व्याख्यात्मक संबंध को अस्वीकार करता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

तुरित सुझाव: पहले दोनों वाक्यों की सत्यता जाँचें, फिर देखें कि शब्द-जाल का दुष्परिणाम भाषा-चयन की आवश्यकता समझाता है या नहीं।

6(iii). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए तथा सही विकल्प चुनकर लिखिए :

स्तंभ-I	स्तंभ-II
1. पेंच खोलना	(i) कथ्य के माध्यम को सरल बनाना
2. बेतरह कसना	(ii) बात में कसावट का न होना
3. कील की तरह ठोंकना	(iii) भाषा को अलंकृत करना

[1 अंक]

- (A) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)
(B) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)
(C) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)
(D) 1-(i), 2-(iii), 3-(ii)

सही उत्तर: (D) 1-(i), 2-(iii), 3-(ii)

हल:

अवधारणा:

- रूपक में पेंच का खोलना अभिव्यक्ति को सरल करने से जुड़ा है।
- बेतरह कसना भाषा की अत्यधिक सजावट और कील की तरह ठोंकना कथ्य को जबरन स्थिर करने का संकेत है।

चरण 1: तीनों संकेतों का अर्थ पहचानना पेंच खोलना कथ्य के माध्यम को सरल बनाना है, अतः 1 का मेल (i) से होगा। बेतरह कसने में कवि भाषा को अनावश्यक अलंकरण से जटिल बनाता है, इसलिए 2 का मेल (iii) से है। चूड़ी मरने पर बात कसावट खो देती है और उसे कील की तरह ठोकना पड़ता है; अतः दिए गए अर्थों में 3 का मेल (ii) से है।

चरण 2: विकल्पों को मिलान से परखना यह क्रम केवल (D) में है। (A) और (C) पेंच खोलने का अर्थ गलत जोड़ते हैं। (B) में पहला मेल सही है, पर दूसरे और तीसरे अर्थ आपस में बदल गए हैं। इसलिए वह संपूर्ण मिलान नहीं दे सकता।

चरण 3: निष्कर्ष सही मिलान 1-(i), 2-(iii), 3-(ii) है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले पेंच खोलने को सरलता और बेतरह कसने को अलंकरण से जोड़ें; शेष अर्थ तीसरे संकेत से मिल जाएगा।

6(iv). कवि भाषा को और अधिक तराशने में क्यों लगा रहा ?

[1 अंक]

- (A) भाषा का महत्त्व न जानने के कारण
- (B) आत्म-संतुष्टि प्राप्त न होने के कारण
- (C) संप्रेषणीय शब्द न मिलने के कारण
- (D) लोगों से मिलने वाली प्रशंसा के कारण

सही उत्तर: (D) लोगों से मिलने वाली प्रशंसा के कारण

हल:

अवधारणा:

- कविता भाषिक प्रदर्शन पर मिलने वाली वाहवाही के आकर्षण को उजागर करती है।
- प्रश्न के कारण का उत्तर अंश में दिए गए स्पष्ट साक्ष्य से निर्धारित करना चाहिए।

चरण 1: पाठ से कारण खोजना कवि कहता है कि उसे इस करतब पर 'तमाशबीनों की शाबाशी और वाह वाह' सुनाई दे रही थी। लोगों की प्रशंसा उसे भाषा को और कसते रहने के लिए प्रेरित करती रही। वह कथ्य की सहजता से अधिक इस बाहरी सराहना में उलझ गया था।

चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर करना (D) सीधे इसी प्रशंसा का उल्लेख करता है। (A) भाषा का महत्त्व न जानने का दावा करता है, जो अंश का दिया कारण नहीं है। (B) आत्म-संतुष्टि का अभाव और (C) संप्रेषणीय शब्दों की कमी बताते हैं; दोनों के लिए यहाँ कोई प्रत्यक्ष आधार नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि लोगों से मिलने वाली प्रशंसा के कारण भाषा को और तराशता रहा। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: कारण पूछे जाने पर 'क्यों कि' के बाद की पंक्तियाँ पढ़ें; शाबाशी और वाहवाही उत्तर का सीधा संकेत हैं।

6(v). 'क्यों कि इस करतब पर मुझे' – पंक्ति में किस करतब की बात हो रही है ?

[1 अंक]

- (A) भाषा को अलंकृत करने की
- (B) कथ्य को अलंकृत करने की
- (C) कविता पाठ करने की
- (D) पाठक और श्रोताओं को लुभाने की

सही उत्तर: (A) भाषा को अलंकृत करने की

हल:

अवधारणा:

- यहाँ करतब का अर्थ भाषा को अनावश्यक रूप से सजाने और जटिल बनाने का प्रदर्शन है।
- कवि का संकेत कथ्य से ध्यान हटाकर अभिव्यक्ति के बाहरी चमत्कार पर टिक जाने की ओर है।

चरण 1: पूर्ववर्ती पंक्ति से करतब पहचानना 'उसे बेतरह कसता चला जा रहा था' के बाद कवि इस प्रक्रिया को करतब कहता है। पेंच कसने के रूपक में यह भाषा को जरूरत से अधिक तराशना और अलंकृत करना है। उसी भाषिक चमत्कार पर तमाशबीन शाबाशी देते हैं।

चरण 2: चारों विकल्पों की जाँच करना (A) भाषा को अलंकृत करने की इसी क्रिया को व्यक्त करता है। (B) कथ्य को सजाने की बात करता है, जबकि समस्या उसके भाषिक माध्यम में है। (C) कविता-पाठ का कोई उल्लेख नहीं मिलता। (D) श्रोताओं को लुभाने के व्यापक उद्देश्य को बताता है, पर प्रश्न जिस विशेष करतब का संकेत करता है, वह भाषिक अलंकरण है।

चरण 3: निष्कर्ष यहाँ भाषा को अलंकृत करने के करतब की बात हो रही है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: 'करतब' को उससे पहले के बेतरह कसने से जोड़ें; क्रिया भाषा की सजावट है, केवल कविता-पाठ नहीं।

7(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

'कविता के बहाने' कविता के संदर्भ में कविता और चिड़िया की उड़ान के बीच तुलनात्मक वर्णन करते हुए लिखिए कि किसकी उड़ान अधिक है और क्यों ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में चिड़िया की उड़ान कविता की कल्पनाशीलता को समझाने का आधार है। दोनों में गति और विस्तार हैं, पर उनकी सीमाएँ समान नहीं हैं।
- चिड़िया की उड़ान भौतिक आकाश और उसकी शारीरिक सामर्थ्य से बँधी है। कविता की उड़ान अनुभूति, कल्पना और मानवीय संवेदना का विस्तार है।

चरण 1: तुलना का आधार समझिए कवि चिड़िया की उड़ान के बहाने कविता की व्यापकता बताते हैं। चिड़िया बाहर के आकाश में उड़ती है; कविता बाहर के संसार के साथ मनुष्य के भीतरी जगत में भी प्रवेश करती है। इसलिए केवल ऊँचाई या दूरी के आधार पर दोनों की तुलना करना पर्याप्त नहीं है।

चरण 2: उड़ान की सीमा स्पष्ट कीजिए चिड़िया एक सजीव प्राणी है, जिसकी उड़ान स्थान, समय और शरीर की शक्ति पर निर्भर है। कविता कल्पना के सहारे अतीत और भविष्य तक पहुँच सकती है तथा अलग-अलग अनुभवों और मनुष्यों को जोड़ सकती है। यहाँ असीमितता का आशय संवेदना और अर्थ के विस्तार से है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर चिड़िया की उड़ान भौतिक आकाश और उसकी शारीरिक क्षमता तक सीमित है, जबकि कविता कल्पना तथा संवेदना के सहारे देश-काल की सीमाएँ पार करती है। वह बाहरी संसार के साथ मनुष्य के अंतर्मन में भी पहुँचती है। इसीलिए कविता की उड़ान अधिक व्यापक है; चिड़िया स्वयं भी उसके असीम विस्तार को नहीं जान सकती।

चरण 4: निष्कर्ष कविता की उड़ान अधिक व्यापक है, क्योंकि उसका कल्पनात्मक और भावात्मक विस्तार चिड़िया की भौतिक उड़ान

की सीमाओं से परे है।

त्वरित सुझाव: तुलना में पहले चिड़िया की भौतिक सीमा और फिर कविता की कल्पना तथा संवेदना का असीम विस्तार लिखिए।

7(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘कैमरे में बंद अपाहिज’ कविता में मीडियाकर्मियों की संवेदनहीनता का उल्लेख हुआ है, क्या इस प्रकार की संवेदनहीनता हमें अन्य क्षेत्रों में भी देखने को मिलती है ? उदाहरण सहित तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता में पीड़ित की गरिमा के स्थान पर कार्यक्रम की सफलता और दर्शकों की भावुक प्रतिक्रिया को महत्त्व दिया जाता है।
- उत्तर में कविता की संवेदनहीनता को दूसरे क्षेत्रों के ठोस उदाहरण से जोड़कर तर्क देना है; सभी व्यक्तियों या पूरे व्यवसाय को दोषी नहीं ठहराना है।

चरण 1: कविता की संवेदनहीनता पहचानिए कार्यक्रम का संचालक दिव्यांग व्यक्ति से ऐसे सवाल पूछता है जो उसकी पीड़ा को उभारें। उसकी वास्तविक सहायता करने के बजाय कैमरे के सामने उसका दुःख दिखाना उद्देश्य बन जाता है। व्यक्ति को संवेदना और सम्मान का अधिकारी समझने के स्थान पर प्रदर्शन की सामग्री बनाना ही इस व्यवहार की समस्या है।

चरण 2: अन्य क्षेत्र से संबंध स्थापित कीजिए दुर्घटनास्थल पर घायल को अस्पताल पहुँचाने के बजाय उसका वीडियो बनाना इसी प्रवृत्ति का उदाहरण है। चिकित्सा के क्षेत्र में भी केवल धन के अभाव में जरूरतमंद की उपेक्षा ऐसी संवेदनहीनता दिखा सकती है। इन उदाहरणों में मनुष्य की तत्काल आवश्यकता पर प्रचार या लाभ भारी पड़ता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर हाँ, ऐसी संवेदनहीनता अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई देती है। दुर्घटना में घायल व्यक्ति की सहायता करने के बजाय उसका वीडियो बनाना तथा धन के अभाव में रोगी की उपेक्षा करना इसके उदाहरण हैं। कविता में मीडियाकर्मियों की तरह ऐसे लोग भी पीड़ित की गरिमा और आवश्यकता भूल जाते हैं। मानवीय संवेदना का अर्थ दुःख का प्रदर्शन नहीं, वास्तविक सहायता है।

चरण 4: निष्कर्ष जहाँ प्रचार, लाभ या स्वार्थ के लिए पीड़ित की सहायता और गरिमा की उपेक्षा होती है, वहाँ कविता में दिखाई गई संवेदनहीनता प्रकट होती है।

त्वरित सुझाव: एक ठोस उदाहरण देकर बताएँ कि उसमें पीड़ित की कौन-सी आवश्यकता दब गई; केवल संवेदनहीनता की सूची न बनाइए।

7(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

“तुलसीदास द्वारा रचित ‘खेती न किसान’ छंद में प्रकृति और शासन की विषमता से उपजी स्थिति का यथार्थपरक चित्रण हुआ है।” पुष्टि कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास का यह छंद आजीविका के साधनों से वंचित समाज की सामूहिक दुर्दशा का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है।
- किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक के उदाहरण संकट की व्यापकता दिखाते हैं; किसी एक व्यक्ति की निजी असफलता यहाँ विषय नहीं है।

चरण 1: छंद में वर्णित वास्तविक स्थिति पहचानिए खेती न मिलना किसान की आजीविका के संकट को बताता है। भिखारी को भीख, व्यापारी को व्यापार और नौकरी चाहने वाले को काम न मिलना दिखाता है कि संकट समाज के अनेक वर्गों तक फैला है। इससे भूख, दीनता और असहायता उत्पन्न होती है।

चरण 2: प्रकृति और शासन की विषमता से जोड़िए कृषि का संकट प्रतिकूल प्राकृतिक परिस्थितियों से जुड़ता है, जबकि रोज़गार और जीविका की व्यापक असुरक्षा तत्कालीन व्यवस्था की विफलता को भी सामने लाती है। कवि किसी विशिष्ट शासक या किसी निश्चित प्राकृतिक आपदा का नाम नहीं देते। इसलिए पुष्टि छंद के आजीविका संबंधी संकेतों से करनी चाहिए, अनुलिखित ऐतिहासिक विवरण जोड़कर नहीं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर तुलसीदास ने किसान को खेती, भिखारी को भीख, व्यापारी को व्यापार और सेवक को नौकरी न मिलने का चित्र प्रस्तुत किया है। प्रकृति की प्रतिकूलता तथा शासन की अव्यवस्था से आजीविका के साधन समाप्त हो गए हैं। लोग भूख और असहायता से व्याकुल होकर पूछते हैं कि कहाँ जाएँ, क्या करें। विविध वर्गों की यह दुर्दशा तत्कालीन संकट का यथार्थ चित्र है।

चरण 4: निष्कर्ष विभिन्न वर्गों की आजीविका का संकट और उनकी दिशाहीन व्याकुलता छंद के यथार्थपरक सामाजिक चित्रण की पुष्टि करते हैं।

त्वरित सुझाव: पुष्टि के लिए किसान, भिखारी, व्यापारी और सेवक की आजीविका का उल्लेख कर उसे सामूहिक संकट से जोड़िए।

8(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘बादल राग’ कविता में कवि ने ऐसा क्यों कहा है कि ‘सदा पंक पर ही होता जल-विप्लव-प्लावन’ ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला की कविता में बादल क्रांति का और पंक उपेक्षित, शोषित जनजीवन का प्रतीक बनता है।
- जल-विप्लव-प्लावन में वर्षा के जल का उमड़ना तथा सामाजिक परिवर्तन से वंचित वर्गों को मिलने वाला नया जीवन, दोनों अर्थ जुड़े हैं।

चरण 1: पंक और जल-विप्लव का संबंध समझिए बादलों की वर्षा का जल धरती के निचले, कीचड़ वाले भागों में भरता और फैलता है। कविता में पंक को केवल गंदगी समझना पर्याप्त नहीं है। वह उस उपेक्षित जनसमुदाय की ओर संकेत करता है जिसका जीवन परिवर्तन की सबसे अधिक आवश्यकता अनुभव करता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर पंक शोषित और उपेक्षित जनसमुदाय का प्रतीक है। जैसे वर्षा का जल निचले कीचड़युक्त स्थानों में फैलकर नया जीवन जगाता है, वैसे ही क्रांति का लाभ वंचित वर्गों को मिलता है। उनके अभावग्रस्त जीवन में परिवर्तन की आशा और नवचेतना उत्पन्न होती है।

चरण 3: निष्कर्ष यह कथन उपेक्षित जनजीवन में क्रांति से आने वाली नवचेतना और परिवर्तन को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: पहले पंक का प्रतीकार्थ लिखिए, फिर वर्षा के जल और क्रांति से मिलने वाले नवजीवन का संबंध स्पष्ट कीजिए।

8(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘बगुलों के पंख’ कविता से उद्धृत ‘उसे कोई तनिक रोक रक्खो’ पंक्ति से क्या आशय है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि काले बादलों के बीच उड़ते श्वेत बगुलों के सौंदर्य से अभिभूत है।
- प्रकृति का मनोहारी दृश्य क्षणिक है; कवि उसके आकर्षण को देर तक अनुभव करना चाहता है।

चरण 1: दृश्य और कवि की अनुभूति समझिए काले बादलों की पृष्ठभूमि में बगुलों के उजले पंख अत्यंत सुंदर दिखाई देते हैं। उनका उड़ता हुआ समूह कवि का मन बाँध लेता है। यहाँ प्रकृति के दृश्य के प्रति तन्मयता व्यक्त हुई है; कवि की दृष्टि उस सौंदर्य से हट नहीं

पाती। इस आग्रह में प्रकृति को आदेश देने की शक्ति नहीं, सौंदर्य से अभिभूत मन की व्याकुलता दिखाई देती है। कवि उस अनुभव को खोना नहीं चाहता।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर काले बादलों के बीच उड़ते श्वेत बगुलों के पंखों का सौंदर्य कवि को सम्मोहित कर लेता है। वह चाहता है कि यह मनोहारी दृश्य कुछ देर ठहर जाए, जिससे वह उसके आकर्षण और आनंद को अधिक समय तक अनुभव कर सके।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति में मुग्ध कवि की सुंदर दृश्य को कुछ देर थाम लेने की उत्कट इच्छा व्यक्त हुई है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले काले बादलों और उजले पंखों का विरोधी रंग-संयोजन बताएँ, फिर सौंदर्य को रोक लेने की इच्छा स्पष्ट करें।

8(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘पतंग’ कविता के संदर्भ में बच्चों और कपास के बीच का संबंध स्पष्ट कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कपास की कोमलता और भारहीनता बच्चों के तन-मन की सहजता को व्यक्त करती है।
- पतंग उड़ाते समय बच्चों का उल्लास और निर्भय गति कविता के केंद्रीय अनुभव हैं।

चरण 1: तुलना का आधार पहचानिए कवि बच्चों के शरीर को कपास जैसा बताकर उनके हलकेपन और लचीलेपन को उभारता है। पतंग उड़ाते समय वे उत्साह से दौड़ते और उछलते हैं। कपास की कोमलता बालसुलभ नाजुकता को भी व्यक्त करती है; तुलना रंग या कपड़े तक सीमित नहीं है। इस बिंब से बालपन की उमंग सजीव होती है। बच्चे खेल में इतने तल्लीन हैं कि उनका शरीर धरती के बंधनों से मुक्त होकर उड़ने को तैयार लगता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि ने बच्चों के शरीर को कपास जैसा हलका, कोमल और लचीला बताया है। पतंग उड़ाते समय उत्साह से भरे बच्चे निर्भय होकर दौड़ते और उछलते हैं। कपास की तरह उनका हलकापन उनकी मुक्त गति तथा बालसुलभ कोमलता को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों और कपास का संबंध उनके शरीर के हलकेपन, कोमलता और लचीलेपन पर आधारित है।

त्वरित सुझाव: कपास का उल्लेख देखते ही हलकापन और कोमलता लिखें तथा उन्हें पतंग उड़ाते बच्चों की उछलकूद से जोड़ें।

9(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

हैजे और मलेरिया से पीड़ित गाँव की स्थिति का वर्णन ‘पहलवान की ढोलक’ पाठ के अनुसार अपने शब्दों में कीजिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेणु की कहानी में महामारी के साथ गरीबी और उपचार का अभाव ग्रामीण जीवन का संकट बढ़ाते हैं।
- भयभीत और निराश गाँव में ढोलक की आवाज जीवन-संघर्ष का साहस जगाती है।

चरण 1: गाँव की भौतिक और मानसिक दशा पहचानिए हैजे और मलेरिया ने गाँव को उजाड़-सा बना दिया था। अनेक लोग बीमार थे और लगातार मौतें हो रही थीं। निर्धनता के कारण पर्याप्त भोजन तथा इलाज नहीं मिल पाता था। रात का सन्नाटा और अपनों की मृत्यु का भय लोगों की निराशा को और बढ़ाते थे। कहानी में इस वातावरण से ग्रामीणों की सामूहिक पीड़ा सामने आती है। ढोलक की लय उनके रोग का उपचार नहीं करती, लेकिन निराश मन को लड़ने की प्रेरणा देती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर हैजे और मलेरिया से गाँव में मृत्यु और भय का वातावरण था। लोग बीमारी, भूख और उपचार के अभाव से असहाय थे। घरों में करुण क्रंदन तथा रात में सन्नाटा छाया रहता था। पहलवान की ढोलक उन्हें इस संकट में साहस देती थी।

चरण 3: निष्कर्ष महामारी, गरीबी और लगातार मौतों से गाँव त्रस्त था; ढोलक की ध्वनि दुखी लोगों का मनोबल सँभालती थी।

त्वरित सुझाव: गाँव की दशा बताते समय बीमारी, भोजन-इलाज की कमी और मृत्यु-भय लिखें; ढोलक की भूमिका अंत में जोड़ें।

9(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘भक्तिन’ पाठ के आधार पर लिखिए कि महादेवी जी के घर आने वाले साहित्यकारों के प्रति भक्तिन के सम्मान का क्या मापदंड था ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन का मूल्यांकन पुस्तकीय विद्वत्ता या साहित्यिक प्रतिष्ठा पर आधारित नहीं था।
- लेखिका के प्रति स्नेह और आत्मीयता से वह उनके परिचितों का महत्व पहचानती थी।

चरण 1: सम्मान की वास्तविक कसौटी समझिए भक्तिन साहित्यकारों की रचनाएँ पढ़कर उनका दर्जा नहीं तय करती थी। उसका संसार लेखिका की आत्मीयता से जुड़ा था। इसलिए किसी आगंतुक का लेखिका के साथ स्नेहपूर्ण संबंध और उसके प्रति लेखिका का अपनापन ही भक्तिन के आदर का आधार बनता था। इससे भक्तिन की भावनाप्रधान दृष्टि स्पष्ट होती है। उसके लिए लेखिका का निजी अपनापन किसी आगंतुक की बाहरी प्रतिष्ठा से अधिक महत्वपूर्ण है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर भक्तिन साहित्यकारों का सम्मान उनकी प्रसिद्धि, पद अथवा रचनाओं के आधार पर नहीं करती थी। उसकी कसौटी महादेवी जी के प्रति उनका स्नेह और आत्मीय संबंध था। लेखिका के प्रति जिसका जितना अपनापन होता, भक्तिन उसे उतना ही अधिक आदर देती थी।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन के सम्मान का मापदंड साहित्यिक यश से अधिक महादेवी जी के प्रति आगंतुक का आत्मीय स्नेह था।

त्वरित सुझाव: उत्तर को महादेवी जी से आत्मीय संबंध पर केंद्रित रखें; प्रसिद्धि या विद्वत्ता को सम्मान का आधार न बनाएँ।

9(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए :

‘श्रम विभाजन और जाति प्रथा’ पाठ के आधार पर लिखिए कि श्रम विभाजन की क्या आवश्यकता है ? पाठ में इसकी किस कमी की ओर संकेत किया गया है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सभ्य समाज में अनेक आवश्यक कार्य संपन्न करने के लिए श्रम-विभाजन उपयोगी और आवश्यक है।
- आंबेडकर जाति-आधारित वंशानुगत श्रमिक-विभाजन की आलोचना करते हैं, जो योग्यता और स्वतंत्र चयन की उपेक्षा करता है।

चरण 1: आवश्यकता और दोष को अलग कीजिए समाज के सभी काम एक व्यक्ति नहीं कर सकता; विभिन्न व्यवसायों और सेवाओं का बँटवारा सामाजिक व्यवस्था चलाता है। दोष श्रम-विभाजन के विचार में नहीं, जाति-प्रथा द्वारा उसे जन्म से बाँधने में है। इसमें व्यक्ति की रुचि, क्षमता और पेशा बदलने की स्वतंत्रता दब जाती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर समाज के विविध कार्य व्यवस्थित और कुशल ढंग से पूरे करने के लिए श्रम-विभाजन आवश्यक है। किंतु जाति-प्रथा इसे जन्म-आधारित श्रमिक-विभाजन बना देती है। इसमें व्यक्ति की रुचि और योग्यता की उपेक्षा होती है तथा उसे व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं मिलती।

चरण 3: निष्कर्ष आवश्यक श्रम-विभाजन की कमी उसका जाति-आधारित, वंशानुगत और व्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित करने वाला रूप है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो हिस्से रखें: पहले सामाजिक कार्यों के बँटवारे की आवश्यकता, फिर जाति से बँधे पेशे में रुचि-योग्यता की उपेक्षा।

10(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘भक्तिन और मेरे बीच में सेवक-स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है’ – महादेवी जी के इस कथन के पीछे के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण में भक्तिन केवल वेतन लेकर काम करने वाली सेविका नहीं, लेखिका के जीवन की आत्मीय सहचरी है।
- सेवक और स्वामी का औपचारिक संबंध आदेश तथा वेतन पर टिकता है; यहाँ स्नेह, अधिकार और परस्पर विश्वास अधिक महत्वपूर्ण हैं।

चरण 1: आत्मीयता और अधिकार को समझना भक्तिन लेखिका के घर को अपना घर मानती है। वह उनके भोजन और रहन-सहन की चिंता करती है तथा अपनी समझ के अनुसार उन्हें नियंत्रित भी करती है। लेखिका के जीवन पर उसका यह अधिकार उसे सामान्य नौकरानी की स्थिति से अलग करता है। उसका व्यवहार केवल किसी स्वामी का आदेश मानने वाले व्यक्ति का व्यवहार नहीं है।

चरण 2: संबंध की पारस्परिकता पहचानना लेखिका भी भक्तिन को परिवार की आत्मीय सदस्य के रूप में स्वीकार करती हैं। भक्तिन उनके सुख-दुःख में साथ देती है और विपत्ति में भी उनका साथ छोड़ना नहीं चाहती। दोनों एक-दूसरे के स्वभाव और आदतों से प्रभावित होती हैं। इसलिए इस संबंध की व्याख्या केवल आर्थिक लेन-देन अथवा ऊँच-नीच के आधार पर नहीं की जा सकती।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन और महादेवी जी का संबंध वेतन और आदेश तक सीमित नहीं था। भक्तिन लेखिका को अपना मानकर उनके भोजन तथा रहन-सहन पर अधिकार जताती और सुख-दुःख में साथ देती थी। लेखिका भी उसे परिवार का आत्मीय सदस्य मानती थीं। दोनों के बीच स्नेह, विश्वास और अपनापन था। इसलिए उनके संबंध को केवल सेवक-स्वामी का संबंध कहना कठिन है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में भक्तिन के अधिकार, लेखिका की आत्मीयता और संकट में साथ देने की भावना को जोड़कर संबंध स्पष्ट कीजिए।

10(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

‘बाज़ार दर्शन’ पाठ में लोक वैभव की व्यंग्य शक्ति किसे कहा गया है ? इसके क्या दुष्परिणाम होते हैं ? यह शक्ति किसके सम्मुख चूर-चूर हो जाती है ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जैनेंद्र कुमार बाज़ार की चकाचौंध के मन पर पड़ने वाले प्रभाव को समझाते हैं। बाहरी वैभव व्यक्ति को अपनी कमी का तीखा अनुभव कराता है।
- संतोष और स्पष्ट आवश्यकता बाज़ार के आकर्षण पर नियंत्रण देते हैं; भगत जी इस आत्मसंयम का उदाहरण हैं।

चरण 1: व्यंग्य शक्ति और उसका प्रभाव स्पष्ट करना लोक-वैभव की व्यंग्य शक्ति संपन्नता का वह आकर्षक प्रदर्शन है जो देखने वाले को अपनी सीमित स्थिति पर असंतुष्ट कर देता है। दूसरों के पास वस्तुओं की अधिकता देखकर व्यक्ति को अपना जीवन अभावग्रस्त लगने लगता है। इस प्रकार यह शक्ति बिना कुछ बोले उसकी सीमाओं का उपहास करती प्रतीत होती है।

चरण 2: दुष्परिणाम और शक्ति की सीमा पहचानना इस प्रभाव से ईर्ष्या, बढ़ती तृष्णा और अपनी क्रयशक्ति पर गर्व या खीझ पैदा होती है। आदमी आवश्यकता भूलकर अनावश्यक वस्तुएँ खरीद सकता है। इसके विपरीत भगत जी जैसे संतोषी व्यक्ति अपनी जरूरत जानते हैं और धन तथा वैभव से विचलित नहीं होते। उनकी आत्मतृप्ति के सामने यह व्यंग्य निष्प्रभावी हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष लोक-वैभव की व्यंग्य शक्ति दूसरों की संपन्नता का वह प्रदर्शन है जो मनुष्य को अपनी स्थिति हीन और अभावपूर्ण लगने पर विवश करता है। इससे ईर्ष्या, असंतोष, तृष्णा और अनावश्यक खरीदारी की प्रवृत्ति बढ़ती है। यह शक्ति भगत जी जैसे संतोषी, आत्मतृप्त और अपनी आवश्यकताओं को पहचानने वाले व्यक्ति के सामने चूर-चूर हो जाती है।

त्वरित सुझाव: तीनों प्रश्नों का क्रम रखें: वैभव का प्रभाव, उससे उपजे दोष और संतोषी भगत जी के सामने उसकी निष्प्रभावता।

10(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :

काले मेघों के झमाझम बरसने पर भी गगरी फूटी की फूटी और बैल प्यासे के प्यासे क्यों रह जाते हैं ? 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर लिखिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती के पाठ का अंतिम प्रश्न पानी के प्रसंग से आगे बढ़कर देश में संसाधनों के वितरण की विडंबना सामने लाता है।
- फूटी गगरी और प्यासे बैल समृद्धि आने पर भी साधारण लोगों की मूल आवश्यकताएँ पूरी न होने के संकेत हैं।

चरण 1: प्रतीकों का सामाजिक अर्थ समझना काले मेघों का बरसना उपलब्ध साधनों और विकास की संभावनाओं का संकेत है। फिर भी गगरी का फूटा रहना बताता है कि उन साधनों को सँभालने और जरूरतमंद तक पहुँचाने की व्यवस्था दोषपूर्ण है। बैलों की प्यास श्रम करने वालों की अधूरी आवश्यकताओं को सामने लाती है। इस विरोधाभास को केवल वर्षा की कमी बताना उचित नहीं होगा।

चरण 2: संसाधनों के दुरुपयोग से संबंध जोड़ना देश में योजनाओं और सहायता पर पर्याप्त साधन खर्च होने पर भी उनका लाभ सामान्य जनता तक पूरा नहीं पहुँचता। भ्रष्टाचार, स्वार्थ और अव्यवस्था बीच में बाधा बनते हैं। लेखक इस स्थिति पर प्रश्न उठाता है कि प्रचुरता के बावजूद अभाव क्यों बना हुआ है। अतः समाधान केवल साधन जुटाना नहीं, उनका ईमानदार और न्यायपूर्ण उपयोग भी है।

चरण 3: निष्कर्ष झमाझम बरसते मेघ पर्याप्त साधनों और विकास के अवसरों के प्रतीक हैं, जबकि फूटी गगरी तथा प्यासे बैल जनता के बने हुए अभावों को दिखाते हैं। भ्रष्टाचार, स्वार्थ और दोषपूर्ण व्यवस्था के कारण योजनाओं का लाभ जरूरतमंदों तक नहीं पहुँचता। साधनों का अपव्यय होता रहता है। इसीलिए प्रचुरता आने पर भी सामान्य लोगों की मूल आवश्यकताएँ अधूरी रह जाती हैं।

त्वरित सुझाव: वर्षा का शाब्दिक वर्णन करने के साथ अंतिम प्रश्न का सामाजिक संकेत पहचानें: संसाधन उपलब्ध हैं, किंतु लाभ जनता तक नहीं पहुँचता।

11. जेठ की जलती धूप में, जब धरित्री निर्धूम अग्निकुंड बनी हुई थी, शिरीष नीचे से ऊपर तक फूलों से लद गया था। कम फूल इस प्रकार की गरमी में फूल सकने की हिम्मत करते हैं। कर्णिकार और आरग्वध (अमलतास) की बात मैं भूल नहीं रहा हूँ। वे भी आस-पास बहुत हैं। लेकिन शिरीष के साथ आरग्वध की तुलना नहीं की जा सकती। वह पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है, वसंत ऋतु के पलाश की भाँति। कबीरदास को इस तरह पंद्रह दिन के लिए लहक उठना पसंद नहीं था। यह भी क्या कि दस दिन फूले और फिर खंखड़-के-खंखड़ – 'दिन दस फूला फूलिके खंखड़ भया पलास !' ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले। फूल है शिरीष। वसंत के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक जो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्घात फूलता रहता है। जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है। यद्यपि कवियों की भाँति हर फूल-पत्ते को देखकर मुग्ध होने लायक हृदय विधाता ने नहीं दिया है, पर नितान्त ठूँठ भी नहीं हूँ। शिरीष के पुष्प मेरे मानस में थोड़ा हिल्लोल ज़रूर पैदा करते हैं।

[5 अंक]

11(i). "शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है।" इस कथन के समर्थन में विकल्प है :

[1 अंक]

- (A) शिरीष के साथ और पेड़ों की तुलना नहीं हो सकती।
- (B) शिरीष मन रमने पर भादों में भी फूलों से लदा रहता है।
- (C) शिरीष के पेड़ों पर वसंत ऋतु में फूल आते हैं और आषाढ़ तक रहते हैं।
- (D) अपनी अजेय जिजीविषा के कारण निःस्पृह भाव से प्रचंड गरमी में अविचल खड़ा रहता है।

सही उत्तर: (D) अपनी अजेय जिजीविषा के कारण निःस्पृह भाव से प्रचंड गरमी में अविचल खड़ा रहता है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में कालजयी अवधूत का बिंब विपरीत परिस्थितियों में निर्लिप्त रहकर जीने की शक्ति को व्यक्त करता है।

- प्रचंड गरमी तथा उमस के बीच खेलना शिरीष की अजेय जिजीविषा का प्रमाण है।

चरण 1: कथन का आधार पहचानना गद्यांश बताता है कि जब लू से हृदय सूखता है, तब भी शिरीष खिला रहता है। उसका महत्त्व केवल लंबे समय तक फूलने में नहीं, प्रतिकूलता में अविचल बने रहने में है। यही जीवन की अजेयता का आशय है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करना (D) में अजेय जिजीविषा, निःस्पृहता और प्रचंड गरमी में अविचलता एक साथ हैं। (A) केवल तुलना की बात करता है। (B) भादों में फूलने की स्थिति बताता है और (C) फूलने की अवधि; ये कथन अकेले अवधूत जैसी निर्लिप्त दृढ़ता को पूरा व्यक्त नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष की निःस्पृह और अविचल जिजीविषा कथन का आधार है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: अवधूत और अजेयता जैसे संकेत शब्दों को उस विकल्प से मिलाएँ जिसमें कठिन परिस्थितियों के बीच दृढ़ता व्यक्त हो।

11(ii). 'दिन दस फूला' पंक्ति का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है ?

[1 अंक]

- (A) पलाश के फूलों की अल्पायु का वर्णन करने के लिए
- (B) जीवन की नश्वरता का उल्लेख करने के लिए
- (C) शिरीष के फूलों को औरों से श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए
- (D) जीवन की क्षणभंगुरता का उल्लेख करने के लिए

सही उत्तर: (A) पलाश के फूलों की अल्पायु का वर्णन करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- उद्धृत पंक्ति का अर्थ उसके तत्काल प्रसंग से निर्धारित होता है। यहाँ चर्चा पलाश और अमलतास के थोड़े दिन खिलने की है।
- सामान्य दार्शनिक अर्थ और गद्यांश में प्रयुक्त विशिष्ट संदर्भ को अलग पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: पंक्ति का तत्काल प्रसंग पढ़ना लेखक पहले बताता है कि अमलतास पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है, जैसे वसंत का पलाश। फिर कबीर की पंक्ति देकर थोड़े दिन की चमक के बाद पलाश के सूने हो जाने का वर्णन करता है। इसलिए इसका प्रत्यक्ष संदर्भ फूलों की अल्पायु है।

चरण 2: शेष विकल्पों को परखना (A) पलाश के फूलों की अल्पायु कहता है और सीधे संदर्भ से मेल खाता है। (B) और (D) जीवन की नश्वरता या क्षणभंगुरता का व्यापक अर्थ देते हैं, जो यहाँ पूछा गया विशिष्ट संदर्भ नहीं है। (C) पूरे अनुच्छेद की तुलना की ओर जाता है, जबकि उद्धरण सीधे पलाश के अल्पकालिक खिलने पर है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति पलाश के फूलों की अल्पायु के संदर्भ में आई है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: उद्धरण से ठीक पहले का वाक्य पढ़ें; संदर्भ पूछे जाने पर व्यापक जीवन-दर्शन की जगह प्रत्यक्ष विषय चुनें।

11(iii). 'नितांत ठूँठ हृदय' से अभिप्राय है :

[1 अंक]

- (A) नीरस
- (B) सरस
- (C) कोमल
- (D) समृद्धिहीन

सही उत्तर: (A) नीरस

हल:

अवधारणा:

- ठूँठ वृक्ष का सूखा, पत्तों और हरियाली से रहित भाग होता है। हृदय के लिए यह शब्द भावनात्मक नीरसता का रूपक है।
- लेखक कहता है कि उसका हृदय पूरी तरह संवेदनाहीन नहीं है, क्योंकि शिरीष के फूल उसमें हिल्लोल उत्पन्न करते हैं।

चरण 1: प्रसंग से भाव ग्रहण करना लेखक स्वयं को कवियों जैसा अत्यधिक भावुक नहीं मानता, फिर भी शिरीष के पुष्प उसके मन में हलचल पैदा करते हैं। इसलिए नितांत ठूँठ हृदय का अर्थ ऐसा हृदय है जिसमें सौंदर्य के लिए रस और संवेदना न हो।

चरण 2: विकल्पों का अर्थ मिलाना (A) नीरस इस भाव को ठीक व्यक्त करता है। (B) सरस और (C) कोमल संवेदना की उपस्थिति बताते हैं, इसलिए विपरीत हैं। (D) समृद्धिहीन आर्थिक या सामान्य अभाव का बोध देता है; यहाँ लेखक धन की नहीं, हृदय की सौंदर्य-अनुभूति की चर्चा कर रहा है।

चरण 3: निष्कर्ष नितांत ठूँठ हृदय से अभिप्राय नीरस हृदय है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: रूपक का अर्थ आसपास के भावों से निकालें: फूल देखकर मन में हलचल होने का विपरीत भाव नीरसता है।

11(iv). निम्नलिखित में हिन्दी मास का नाम नहीं है :

[1 अंक]

- (A) ज्येष्ठ
- (B) आषाढ़
- (C) भाद्रपद
- (D) वसंत

सही उत्तर: (D) वसंत

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में निषेधसूचक शब्द 'नहीं' पर ध्यान देकर मास और ऋतु का भेद पहचानना है।
- गद्यांश में जेठ, आषाढ़ और भादों समय के संकेत हैं; वसंत ऋतु के रूप में आया है।

चरण 1: विकल्पों का वर्गीकरण ज्येष्ठ हिंदी मास है और जेठ उसका प्रचलित नाम है। आषाढ़ भी मास है। भाद्रपद को बोलचाल में भादों कहते हैं। इसलिए (A), (B) और (C) में दिए तीनों नाम मासों के हैं; ये प्रश्न की नकारात्मक शर्त पूरी नहीं करते।

चरण 2: अलग नाम पहचानना वसंत एक ऋतु का नाम है। गद्यांश में भी 'वसंत ऋतु के पलाश' कहकर उसका ऋतु होना स्पष्ट किया गया है। अतः उसे ज्येष्ठ, आषाढ़ और भाद्रपद की तरह किसी एक मास का नाम नहीं मानना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष वसंत हिंदी मास का नाम नहीं है; यह ऋतु है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: 'नहीं' को पहले रेखांकित करें और मास के नामों से ऋतु के नाम को अलग करें।

11(v). 'ऐसे दुमदारों से' लोकोक्ति का अर्थ गद्यांश के संदर्भ में है :

[1 अंक]

- (A) छोटी पूँछ होने से बेहतर है, न होना
- (B) कम होने से बेहतर है, न होना
- (C) कम साधनों से साधनहीनता अच्छी है
- (D) अल्पावधि से अवधिहीनता अच्छी है

सही उत्तर: (D) अल्पावधि से अवधिहीनता अच्छी है

हल:

अवधारणा:

- लोकोक्ति का अर्थ गद्यांश की तुलना से ग्रहण करना चाहिए; केवल पूँछ का शाब्दिक अर्थ पर्याप्त नहीं है।
- यहाँ पलाश और अमलतास का थोड़े दिनों तक फूलना, शिरीष के लंबे समय तक फूलने की पृष्ठभूमि में आया है।

चरण 1: प्रसंग से अर्थ निकालना 'दिन दस फूला' और 'खंखड़ भया पलास' के बाद लेखक यह लोकोक्ति कहता है। आलोचना थोड़े दिनों की चमक के बाद नीरस हो जाने की है। ऐसे अल्पकालिक प्रदर्शन से उसका न होना बेहतर कहा गया है। इसलिए संदर्भ में समय की अल्पता मुख्य है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) पूँछ का शाब्दिक अर्थ देता है, जबकि गद्यांश फूलने की अवधि की चर्चा करता है। (B) सामान्य कमी की बात करता है और अवधि का विशिष्ट संकेत नहीं पकड़ता। (C) साधनों तथा साधनहीनता की बात करता है, जिसका यहाँ प्रसंग नहीं है। (D) अल्पावधि का स्पष्ट उल्लेख करता है, इसलिए प्रसंगानुकूल है।

चरण 3: निष्कर्ष गद्यांश के संदर्भ में अर्थ है—अल्पावधि से अवधिहीनता अच्छी है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: लोकोक्ति से ठीक पहले आए 'दिन दस' को देखें; यहाँ मात्रा या साधन नहीं, अवधि निर्णायक है।

12(i). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

'हम पुरानी चाल के, हमारी घड़ी पुरानी चाल की' – 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में पंतजी द्वारा यह कथन किस संदर्भ में कहा गया ? इस कथन के आलोक में पंतजी की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र की विशेषता का आधार पात्र का कथन और उससे जुड़ी घटना होनी चाहिए।
- इस प्रसंग में पुरानी घड़ी के प्रति लगाव से पंतजी की परंपराप्रियता और आधुनिक दिखावे के प्रति दृष्टि प्रकट होती है।

चरण 1: प्रसंग और उत्तर की योजना पहले दफ्तर में चट्टा की टिप्पणी और पंतजी की प्रतिक्रिया बतानी है। इसके बाद चार विशेषताएँ स्पष्ट करनी हैं—परंपराप्रियता, स्मृतियों से भावनात्मक लगाव, सादगी तथा विनोदप्रिय स्वाभिमान। प्रत्येक गुण को घड़ी वाले प्रसंग से जोड़ने पर चरित्र-चित्रण ठोस बनता है।

चरण 2: कथन से चार विशेषताएँ जोड़ना पुरानी चाल का अर्थ केवल घड़ी की बनावट नहीं, पंतजी की जीवन-दृष्टि भी है। वे अपने परिचित संस्कारों को आसानी से त्यागना नहीं चाहते; यह उनकी परंपराप्रियता है। घड़ी का विवाह में मिलना उसे निजी स्मृति बना देता है; उसे सँभालना भावनात्मक लगाव बताता है। घड़ी सही समय दे रही है, इसलिए उसकी उपयोगिता उनके लिए फैशन से अधिक महत्वपूर्ण है; यह सादगी है। चट्टा की टिप्पणी पर उनका उत्तर अपने ऊपर भी हलका विनोद करता है, पर अपनी पसंद का सम्मान बनाए रखता है; इससे विनोदप्रियता और स्वाभिमान साथ प्रकट होते हैं। उत्तर में इन्हीं प्रमाणित गुणों को रखना चाहिए, किसी अनकही घटना को नहीं जोड़ना चाहिए।

चरण 3: लगभग 100 शब्दों में उत्तर दफ्तर में चट्टा ने पंतजी की पुरानी घड़ी का मजाक उड़ाकर जापानी डिजिटल घड़ी लेने की सलाह दी। पंतजी ने बताया कि यह घड़ी उन्हें विवाह में मिली थी और उक्त कथन कहा। इससे उनकी चार विशेषताएँ उभरती हैं। पहली, वे

परंपराप्रिय हैं और पुरानी जीवन-पद्धति से जुड़े हैं। दूसरी, वे भावुक हैं; विवाह की स्मृति के कारण घड़ी से लगाव रखते हैं। तीसरी, वे सादगीप्रिय हैं; ठीक चलती वस्तु को केवल नए फैशन के लिए बदलना आवश्यक नहीं समझते। चौथी, वे विनोदप्रिय और स्वाभिमानि हैं; उपहास का उत्तर नाराजगी के बजाय चुटीले ढंग से देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष पंतजी का कथन उनकी परंपराप्रियता, भावनात्मक लगाव, सादगी तथा विनोदप्रिय स्वाभिमान का परिचायक है।

त्वरित सुझाव: चार गुण गिनाने के साथ हर गुण को घड़ी वाले प्रसंग से जोड़ें; प्रसंग का उल्लेख न छोड़ें।

12(ii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

‘जूझ’ कहानी में छात्रों को अनुशासन में रखने के लिए अध्यापकों द्वारा दिए जाने वाले शारीरिक दंड का भी उल्लेख किया गया है। आपकी दृष्टि में छात्रों के साथ इस प्रकार का व्यवहार कहाँ तक उचित है ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। वर्तमान में इसमें क्या परिवर्तन आया है ?

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ‘जूझ’ में शिक्षा पाने के संघर्ष के साथ तत्कालीन विद्यालयी वातावरण भी सामने आता है। शारीरिक दंड का उल्लेख उस समय की अनुशासन संबंधी धारणा को समझने का आधार है।
- तर्कपूर्ण उत्तर में अनुशासन की आवश्यकता और उसे स्थापित करने की विधि में अंतर करना चाहिए। शिक्षक का उद्देश्य छात्र का विकास होना चाहिए, उसके मन में भय उत्पन्न करना नहीं।

चरण 1: शारीरिक दंड का मूल्यांकन पाठ में आए शारीरिक दंड को उचित मान लेने के बजाय उसके परिणामों की जाँच करनी चाहिए। मार से छात्र कुछ समय चुप रह सकता है, पर उसके मन में भय, अपमान और शिक्षक से दूरी पैदा हो सकती है। इससे सीखने की रुचि तथा आत्मविश्वास को चोट पहुँचती है। गलती का कारण समझाना और सुधार का अवसर देना अधिक उपयोगी है। विद्यार्थी की जिज्ञासा तभी विकसित होती है जब वह प्रश्न पूछने में सुरक्षित महसूस करे। इसलिए शिक्षक की दृढ़ता में संवेदनशीलता हो और नियम सभी के लिए स्पष्ट तथा समान हों।

चरण 2: वर्तमान परिवर्तन और लगभग 100 शब्दों में उत्तर ‘जूझ’ में अनुशासन के लिए विद्यार्थियों को शारीरिक दंड देने का उल्लेख है। मेरी दृष्टि में यह व्यवहार अनुचित है। मार से बच्चा भयभीत और अपमानित होता है; उसका आत्मविश्वास तथा पढ़ाई में रुचि घट सकती है। भय से उत्पन्न चुप्पी वास्तविक अनुशासन नहीं है। शिक्षक को गलती का कारण समझकर संवाद, स्नेह और उचित मार्गदर्शन से सुधार करना चाहिए। वर्तमान में बाल-अधिकारों और बाल-केंद्रित शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है। शारीरिक दंड को अस्वीकार्य माना जाता है तथा परामर्श और सकारात्मक प्रोत्साहन पर बल दिया जाता है। फिर भी कहीं-कहीं ऐसी घटनाएँ होना बताता है कि व्यवहार में बदलाव अभी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष अनुशासन आवश्यक है, लेकिन शारीरिक दंड उसका उचित साधन नहीं है। आज शिक्षा का आग्रह सम्मान, संवाद और सकारात्मक मार्गदर्शन की ओर है; इस परिवर्तन को विद्यालयों के दैनिक व्यवहार में उतारना चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले दंड पर अपना स्पष्ट मत दें, फिर उसके दुष्परिणाम और अंत में वर्तमान की बाल-केंद्रित शिक्षण पद्धति का उल्लेख करें।

12(iii). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में लिखिए :

सिंधु घाटी सभ्यता के आधार पर सिद्ध कीजिए कि हमारे पूर्वज आज के इंजीनियरों से जल का प्रबंधन करना कहीं बेहतर जानते थे।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में मोहनजोदड़ो के अवशेष सिंधु सभ्यता की सुव्यवस्थित नगर-योजना और विकसित जल-संस्कृति के प्रमाण हैं।
- जल-प्रबंधन में पानी प्राप्त करना, उसके सुरक्षित उपयोग की व्यवस्था करना और इस्तेमाल के बाद उसकी निकासी सुनिश्चित करना शामिल है। उत्तर में इन तीनों पक्षों के ठोस प्रमाण देने चाहिए।

चरण 1: पाठ से प्रमाण चुनना नगर में कुओं का होना जल की उपलब्धता दर्शाता है। घरों में स्नान की व्यवस्था और घरों से जुड़ी नालियाँ दैनिक स्वच्छता की योजना स्पष्ट करती हैं। ढकी हुई नालियों का जाल गंदे पानी की व्यवस्थित निकासी का प्रमाण है। विशाल स्नानागार में ईंटों की सावधानीपूर्ण जुड़ाई और जलरोधी निर्माण जल को सुरक्षित रोकने की तकनीकी समझ बताते हैं। इस प्रकार उपलब्धता और निकासी दोनों नगर-योजना का अंग थे। तुलना का आधार यही दूरदर्शिता है; प्रत्येक आधुनिक तकनीक को कमतर घोषित करना आवश्यक नहीं है।

चरण 2: लगभग 100 शब्दों में उत्तर सिंधु घाटी सभ्यता का जल-प्रबंधन हमारे पूर्वजों की तकनीकी दक्षता और दूरदर्शिता का प्रमाण है। 'अतीत में दबे पाँव' में वर्णित मोहनजोदड़ो में कुओं से जल-आपूर्ति, घरों में स्नान की व्यवस्था तथा गंदे पानी की निकासी के लिए ढकी हुई नालियाँ थीं। छोटी नालियाँ बड़ी नालियों से जुड़ती थीं। विशाल स्नानागार का जलरोधी निर्माण पानी को रिसने से रोकने की समझ दर्शाता है। जल की उपलब्धता और स्वच्छता को नगर-योजना में एक साथ महत्त्व दिया गया था। आज अनेक नगरों में जलभराव और अव्यवस्थित निकासी देखकर पूर्वजों की योजना अधिक दूरदर्शी लगती है। उनकी तकनीक के साथ उनका सार्वजनिक स्वच्छता-बोध भी अनुकरणीय है।

चरण 3: निष्कर्ष कुएँ, स्नानागार और सुव्यवस्थित नालियाँ सिद्ध करती हैं कि सिंधु सभ्यता में जल-आपूर्ति तथा निकासी की समन्वित योजना थी। यही दूरदर्शिता वर्तमान नगरों के लिए सीख है।

त्वरित सुझाव: केवल नालियों का वर्णन न करें; कुओं से जल-आपूर्ति, स्नानागार में जल-सुरक्षा और ढकी नालियों से निकासी को जोड़कर अपना तर्क पूरा करें।